# जैमिनी पद्धति

## विषय सूची

पृष्ठ संख्या


विषय प्रवेश

1. जैमिनी पद्धति एक दृष्टि में ..... 2
2. कारक ..... 4
3. जैमिनी लग्ने ..... 7
4. जैमिनी दृष्टियां ..... 11
5. चर दशा ..... 13
6. चर दशा की गणना–1 ..... 14
7. चर दशा की गणना–2 ..... 17
8. चरदशा की गणना–3 ..... 21
9. जैमिनी योग ..... 28
10. कारकांश का महत्व ..... 36
11. राशि दशाओं के फल ..... 40
12. कुछ कष्ट कारक दशाएं ..... 42
13. जैमिनी पद्धति द्वारा भविष्य कथन ..... 46
14. जन्मपत्रिका का विश्लेषण ..... 53
15. जातक तत्व' के गुण ..... 56
16 बिबलियोग्राफी ..... 61


Future Point

# 1. जैमिनी पद्धति एक दृष्टि में

**चर कारक :**

सात ग्रह सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि सात चर कारक बनते हैं। वे किस कार्य के कारक बनेंगे, यह जातक की कुंडली में स्थित इन ग्रहों के अंशों पर निर्भर करता है।

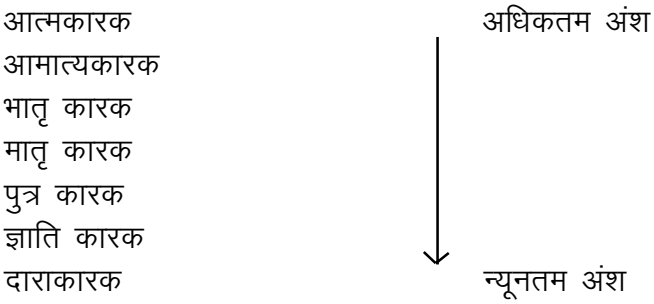


**विशेष :**

1. अंशों की तुलना $0^{o}$ से $30^{o}$ के बीच ही की जाती है, इसमे राशियों को सम्मिलित नहीं किया जाता है।
2. सामान्यतः राहु, केतु को कारकों में सम्मिलित नहीं किया जाता है।

**जैमिनी लग्ने :**

अधिक महत्वपूर्ण लग्ने निम्नलिखित है :

– कारकांश लग्न
– पद लग्न (आरुढ़ लग्न)
– उपपद लग्न
– द्वादश भावों के पद या आरुढ़

कारकांश लग्न और पद लग्न सबसे महत्वपूर्ण हैं तथा सभी प्रकार के भविष्यकथन में उपयोगी हैं।

- लग्न कुंडली में आत्मकारक ग्रह की नवांश राशि कारकांश कहलाती है।
- लग्नेश लग्न से जितनी राशि आगे स्थित हो, लग्नेश से उतनी ही राशि आगे पद लग्न होता है।

**जैमिनी दृष्टियाँ :**

जैमिनी दृष्टियां पाराशरी दृष्टियों से भिन्न हैं।

**पाराशरी दृष्टियां :**

पाराशरी में दृष्टियां ग्रहों की होती हैं। प्रत्येक ग्रह अपने से सातवें भाव पर दृष्टि डालता है। गुरु की दृष्टि अपने से पंचम, सप्तम तथा नवम भाव पर होती है। मंगल अपने से चतुर्थ, सप्तम तथा अष्टम भाव

Future Point

को देखता है। शनि की दृष्टि अपने भाव से तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर रहती है। राहु व केतु की दृष्टियां उनके छायाग्रह होने के कारण नहीं होती हैं। उनका प्रभाव अपने भाव और उससे सप्तम पर होता है। कुछ ज्योतिर्विद उनकी दृष्टियां बृहस्पति के समान मानते हैं।

**जैमिनी दृष्टियां :**

जैमिनी के अनुसार राशियों की भी दृष्टि होती हैं।

1. सभी चर राशियां अर्थात मेष, कर्क, तुला और मकर अपने से अगली स्थिर राशि को छोड़कर बाकी सभी स्थिर राशियों (वृष, सिंह, वृश्चिक और कुंभ) पर दृष्टि डालती हैं।
2. सभी स्थिर राशियां अपने से पीछे वाली चर राशि को छोड़कर बाकी सभी चर राशियों पर दृष्टि डालती हैं।
3. सभी द्विस्वभाव राशियां अर्थात मिथुन, कन्या, धनु और मीन एक दूसरे पर दृष्टि डालती हैं।

**चर दशा :**

- जैमिनी पद्धति में दशाएं राशियों पर आधारित होती हैं, पाराशरी दशाओं की तरह नक्षत्रों पर नहीं।
- चर दशाएं मेष से मीन तक 12 होती हैं। प्रत्येक महादशा में 12 राशियों की 12 अंतर्दशाएं होती हैं। प्रत्येक अंतर्दशा में 12 प्रत्यंतर दशाएं होती हैं।
- चर दशा की अवधि कम होने के कारण प्रत्यंतर दशा के स्तर पर भी घटनाओं का समय काफी निकट आंका जा सकता है।
- दशाओं का क्रम (Order) या क्रम से (सीधा–Direct) होता है या उत्क्रम से (उल्टा–Indirect) होता है। क्रम से–जैसे मेष, वृष, मिथुन, कर्क। उत्क्रम से–जैसे कर्क, मिथुन, वृष, मेष। यही नियम अंतर्दशा और प्रत्यंतर पर लागू होता है।
- दशा की अवधि पूर्व नियत नहीं होती है। यह 1 से 12 वर्षों तक हो सकती है। दशाओं की अवधि और क्रम कुंडली के अनुसार निर्धारित की जाती है।

**जैमिनी योग :**

जैमिनी पद्धिति में भी विविध योगों का वर्णन है जैसे धनयोग, राजयोग, अरिष्ट योग आदि। ये योग पाराशरी योगों से कुछ भिन्न हैं।

**नोट :** इस पुस्तक का उद्येश्य जैमिनी पद्यति का एक परिचय देना है इस कारण जैमिनी के उन पहलुओं का वर्णन नहीं किया जा रहा है जिन पर ज्योतिषियों में अधिक मतभेद है–जैसे कि 'अर्गला' इत्यादि।

## अभ्यास

1. सात चर कारक कौन से हैं तथा उनका क्या अभिप्राय है ?
2. जैमिनी में सबसे प्रमुख लग्न कौन सी हैं ?
3. कारकांश क्या होता है ?
4. पाराशरी और जैमिनी दृष्टियों में क्या अंतर है ?
5. चर दशा के बारे में संक्षेप में बतायें।

Future Point

# 2. कारक

कारक वे ग्रह हैं जो जातक के जीवन में भिन्न–भिन्न क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं। कारक दो प्रकार के होते हैं, स्थिर और चर। भविष्यकथन के लिए दोनों के प्रभावों का सम्मिश्रण किया जाता है।

**स्थिर कारक :**

1. सूर्य और शुक्र में अधिक बली पिता का कारक है।
2. चंद्र और शुक्र में अधिक बली माता का कारक होता है।
3. मंगल छोटे भाई–बहन, साले तथा कभी–कभी माता का भी कारक होता है।
4. बुध चाचा, चाची, मामा, मामी का संकेतक है।
5. गुरु दादा का कारक है।
6. शुक्र पति या पत्नी का कारक होता है।
7. शनि पुत्रों का कारक है।
8. केतु दादी, नानी का कारक है।
9. राहु दादा, नाना का ज्ञान कराता है।

– यह स्थिर कारक जैमिनी सूत्रों के अनुसार हैं।

**चर कारक :**

चर कारक ग्रहों के अंशों के आधार पर सुनिश्चित किये जाते हैं। इसके, लिए राशि का विचार नहीं किया जाता।

अतः राशी के $0^{o}$ से $30^{o}$ के बीच के अंश ही देखे जाते हैं।

आत्मकारक ग्रह के अंश सर्वाधिक होते हैं।

आमात्यकारक ग्रह के अंश द्वितीय सर्वाधिक होते हैं।

भ्रातृकारक ग्रह के अंश तृतीय स्थान पर होते हैं।

मातृकारक ग्रह के अंश चौथे स्थान पर होते हैं।

पुत्रकारक ग्रह के अंश पांचवें स्थान पर होते हैं।

ज्ञातिकारक ग्रह के अंश छठे स्थान पर होते हैं।

दाराकारक ग्रह के अंश न्यूनतम होते हैं।

Future Point

यदि किसी कुंडली में दो या दो से अधिक ग्रहों के अंश समान हों तो मिनट और सैकंड के अंतर द्वारा कारक निर्धारित किये जाते हैं।

कुछ विद्वान 7 की जगह 8 कारकों का समर्थन करते हैं। जिनमें पितृकारक भी सम्मिलित है। आठवें ग्रह के रुप में राहु को लिया जाता है। अधिकांश ज्योतिर्विद 7 कारकों का ही प्रयोग करते हैं। पाराशर चर और स्थिर कारकों के समन्वयन के पक्ष में हैं।

**चर कारकों के कारकत्व :**

**आत्मकारक :** आत्मकारक 'स्वयं' के बारे में सूचित करता है। यह लग्न और लग्नेश के समकक्ष है। जैमिनी पद्धति में इसका बहुत महत्व है। आत्मकारक जातक के शरीर, स्वास्थ्य, स्वभाव, जीवन की रुपरेखा एवं समृद्धि आदि की जानकारी प्रदान करता है।

**आमात्यकारक :**

आमात्यकारक से जातक के मष्तिष्क, विचारशक्ति, आर्थिक और व्यावसायिक प्रतिभा आदि का विचार किया जाता है। जीवनवृत्ति, आर्थिक स्थिति और द्वितीय भाव के मामलों के बारे में जानने के लिए आमात्यकारक भी बहुत महत्व रखता है।

**भ्रातृकारक :**

भ्रातृकारक से तृतीय भाव के विषयों, जातक के प्रयास, पराक्रम, भाई–बहनों आदि का बोध होता है। कभी–कभी इससे पिता का विचार भी किया जाता है।

भाइयों के लिए मंगल तथा भ्रातृकारक और पिता के लिए सूर्य तथा भ्रातृकारक का विश्लेषण करें।

**मातृकारक :**

मातृकारक से माता, चतुर्थ भाव के विषय, स्कूली शिक्षा, घर, वाहन तथा प्रसन्नता (सुख) आदि का विचार किया जाता है। (सुख के साधन)

**पुत्रकारक :**

संतति व शिक्षा, पंचम भाव के विषयों का प्रतिनिधि है। शिक्षा और व्यवसाय में संबंध होने के कारण व्यवसाय का विचार पुत्रकारक से भी किया जाता है।

**ज्ञातिकारक :**

चचेरे भाई–बहनों, कर्ज, बीमारियां, शत्रु आदि का विचार ज्ञातिकारक से होता है। छठे भाव से संबद्ध विषय तथा प्रतियोगिता की भावना भी इससे जाने जाते हैं।

**दाराकारक**

पति/पत्नी तथा सप्तम भाव के विषयों का विचार दाराकारक से होता है।

Future Point

**उदाहरण 1**

स्त्री जातक

जन्मतिथि - 26.10.1947

जन्मसमय - 20.00 Hrs.

जन्मस्थान - शिकागो (U.S.A.)

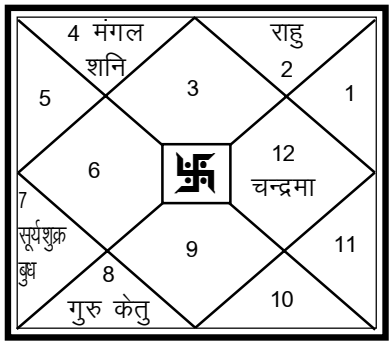


| | |
|---|---|
| लग्न : | 06°41' |
| सूर्य | 09°40' |
| चन्द्रमा | 06°04' |
| मंगल | 21°08' |
| बुध (वक्री) | 28°11' |
| गुरू | 07°29' |
| शुक्र | 23°43' |
| शनि | 28°13' |
| राहु | 00°24' |
| केतु | 00°24' |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आत्म कारक | – | शनि | पुत्र कारक | – | सूर्य |
| आमात्य कारक | – | बुध | ज्ञाति कारक | – | गुरू |
| भ्रातृ कारक | – | शुक्र | दारा कारक | – | चन्द्रमा |
| मातृकारक | – | मंगल | | | |

**उदाहरण 2**

स्त्रीजातक

जन्मतिथि - 28.09.1929

जन्मसमय - 22.44 Hrs.

जन्मस्थान - इन्दौर

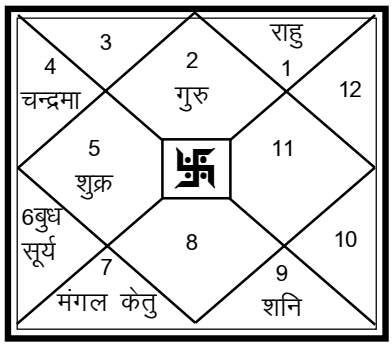


| | |
|---|---|
| लग्न : | 29°42' |
| सूर्य | 12°12' |
| चन्द्रमा | 17°07' |
| मंगल | 01°52' |
| बुध (वक्री) | 29°58' |
| गुरू | 23°27' |
| शुक्र | 10°48' |
| शनि | 01°46' |
| राहु | 19°56' |
| केतु | 19°56' |

| | | | |
|---|---|---|---|
| आत्म कारक | बुध | पुत्र कारक | शुक्र |
| आमात्य कारक | गुरू | ज्ञाति कारक | मंगल |
| भ्रातृ कारक | चन्द्रमा | दारा कारक | शनि |
| मातृकारक | सूर्य | | |

## अभ्यास

1. चर और स्थिर कारकों में क्या अंतर है ?
2. अपनी जन्मकुंडली के चर कारको को लिखें।
3. भ्रातृ कारक से पिता और भाई दोनों के बारे में कैसे जान सकते हैं ?
4. कुंडली का सबसे महत्वपूर्ण कारक कौन है ? और क्यों ?
5. सात चर कारकों का निर्धारण किस आधार पर किया जाता है ?

Future Point

# 3. जैमिनी लग्न

जातक के व्यक्तित्व के विभिन्न आयोग को जानने में विभिन्न लग्नों का उपयोग, जैमिनी महर्षि की ज्योतिष को अमूल्य देन है।

**जैमिनी लग्न :**

1. कारकांश लग्न
2. पद लग्न या लग्नारुढ़ या आरुढ़ लग्न
3. उपपद लग्न
4. द्वादश भावों के पद (आरुढ़)
5. होरा लग्न
6. वर्णद लग्न
7. भाव लग्न
8. घटिका लग्न
9. निषेक लग्न

**उपरोक्त लग्नों में सबसे प्रमुख लग्ने निम्न है :**

1. कारकांश लग्न
2. पद लग्न या लग्नारुढ़ या आरुढ़ लग्न
3. उपपद लग्न
4. द्वादश भावों के पद

**टिप्पणी** : हम इस पुस्तक में केवल इन लग्नों पर ही चर्चा करेंगे।

### 1. कारकांश लग्न (कारकांश)

यह सब लग्नों में प्रमुख है। इसका महत्व जन्म लग्न के समान है। जैमिनी पद्धति में कारकांश एक आधार शिला है। जैमिनी ने 121 सूत्र केवल कारकांश को समर्पित किये है। यह कारकांश के महत्व का प्रमाण है।

**कारकांश कैसे ज्ञात करें :**

1. आत्मकारक ज्ञात करें।
2. नवमांश कुंडली में देखें कि आत्मकारक कौन सी राशि में स्थित है।
3. उस राशि को लग्न कुंडली में देखें।

   यही कारकांश लग्न है।

नवमांश कुंडली में यह राशि स्वांश कहलाती है।

**परिभाषा** : लग्न कुंडली में आत्मकारक की नवांश राशि कारकांश कहलाती है।

**2 पद लग्न :**

पद लग्न या लग्नारुढ़ या आरुढ़ लग्न दूसरी महत्वपूर्ण लग्न है। कारकांश द्वारा प्राप्त फल पद लग्न से भी ज्ञात हो सकते हैं।

**पद लग्न कैसे जानें ?**

1. देखें लग्न से लग्नेश कितने भाव आगे स्थित है।
2. लग्नेश से उतने ही भाव आगे गिनें।

   यही पद लग्न है।

**टिप्पडी** : गिनती की शुरुआत लग्नेश स्थित भाव से होगी। वही भाव 1 गिना जायेगा।

**3. उपपद लग्न या उपपद :**

उपपद लग्न की विशेष उपयोगिता है। इसका विचार विवाह संबंधी प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए किया जाता है। संतान और भाई–बहनों की जानकारी भी इससे प्राप्त की जाती है।

**उपपद जानने की विधि**

1. देखें कि द्वादश भाव से द्वादशेश कितने भाव आगे स्थित है।
2. द्वादशेश से उतने ही भाव आगे गिनें। यह भाव उपपद होगा।

**टिप्पणी** : गिनती उस भाव से शुरु होगी जहां द्वादशेश स्थित है। वह भाव 1 गिना जायेगा।



Future Point

Future Point

### 4. द्वादश भावों के आरुढ़ पदः

इनकी गणना भी पद लग्न और उप पद के समान की जाती है।

प्रथम भाव का आरुढ़ : आरुढ़ लग्न या पद लग्न या लग्नारुढ़
द्वितीय भाव का आरुढ़ : कोष लग्न
तृतीय भाव का आरुढ़ : भ्रातृ लग्न
चतुर्थ भाव का आरुढ़ : सुख लग्न
पंचम भाव का आरुढ़ : मंत्र लग्न, पंचमारुढ़
षष्ठम भाव का आरुढ़ : रिपु लग्न
सप्तम भाव का आरुढ़ : सप्तमारुढ़
अष्टम भाव का आरुढ़ : मृत्यु लग्न
नवम भाव का आरुढ़ : भाग्य लग्न
दशम भाव का आरुढ़ : राज्य लग्न
एकादश भाव का आरुढ़ : लाभ लग्न
द्वादश भाव का आरुढ़ : उपपद लग्न

**उदाहरण 1**

**लग्ने**

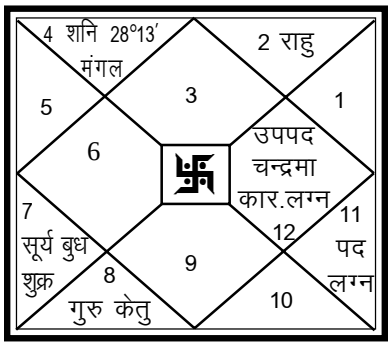


**आरुढ़**

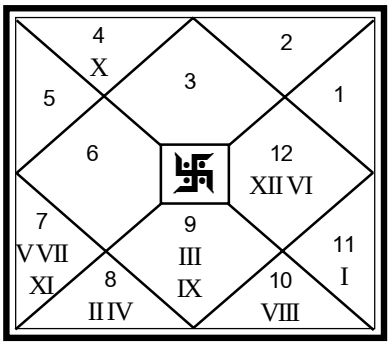


### 1. कारकांश

आत्मकारक शनि है। नवमांश में वह मीन में स्थित है। अतः कारकांश मीन है।

### 2. पद लग्न

लग्नेश बुध लग्न से 5 भाव आगे स्थित है। बुध से 5 भाव आगे कुंभ राशि है जो पद लग्न है।

### 3. उपपद

द्वादशेश शुक्र दादश भाव से 6 भाव आगे स्थित है। शुक्र से 6 भाव आगे मीन है, अतः मीन उपपद है।

Future Point

## उदाहरण 2

लग्ने

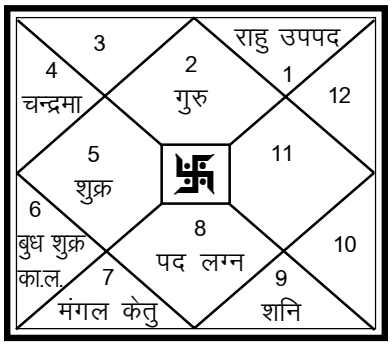


आरुढ़

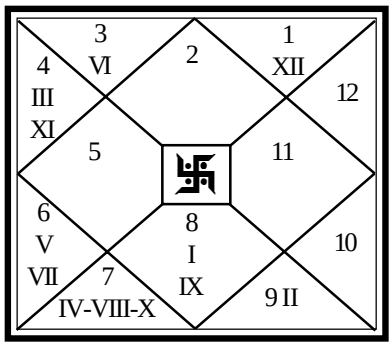


### टिप्पणी

अन्य प्रकार की लग्ने विशिष्ट उद्देश्य के लिए होती हैं। उनके बारे में जानने के लिए जैमिनी पर उपलब्ध विस्तृत ग्रंथ देखें।

## अभ्यास

1. (i) कारकांश कैसे ज्ञात किया जाता है ?
   (ii) पद लग्न कैसे ज्ञात की जाती है ?
   (iii) उप पद कैसे ज्ञात किया जाता है ?
2. सम्पूर्ण कुंडली के आरुढ़ पदों की गणना कैसे की जाती है ?
3. निम्न कुंडली में तीन मुख्य लग्नों को लिखें।

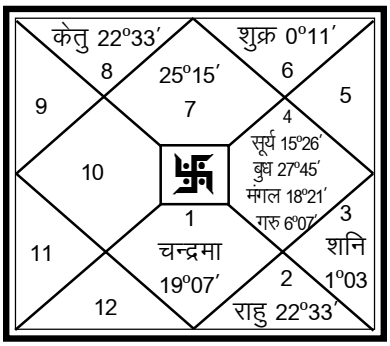


4. इसी कुंडली में 12 आरुढ़ों को चिन्हित करें।
5. कारकांश, पद लग्न और उपपद का क्या महत्त्व है ?

Future Point

# 4. जैमिनी दृष्टियां

महर्षि जैमिनी ने केवल राशियों की दृष्टियों का वर्णन किया है। ग्रहों की दृष्टियों का कोई विशेष वर्णन नहीं है। किन्तु व्यवहार में हम यह समझ सकते हैं कि किसी भी राशी में स्थित ग्रह भी राशी के साथ–साथ दृष्टि डालता है।

**जैमिनी दृष्टियों के नियम :**

**नियम 1**

सभी चर राशियां अपने से अगले भाव की स्थिर राशि को छोड़कर बाकी सभी स्थिर राशियों पर दृष्टि डालती हैं।

- चर राशियां– मेष, कर्क, तुला और मकर 1–4–7–10
- स्थिर राशियां– वृष, सिंह वृश्चिक और कुंभ 2–5–8–11
- द्विस्वभाव राशियां– मिथुन, कन्या, धनु और मीन 3–6–9–12

**नियम 2**

सभी स्थिर राशियां अपने से पीछे वाले भाव की चर राशि को छोड़कर बाकी सभी चर राशियों पर दृष्टि डालती हैं।

**नियम 3**

सभी द्विस्वभाव राशियां एक दूसरे पर दृष्टि डालती हैं। उनके आगे या पीछे कोई द्विस्वभाव राशी नहीं होती है।

**उदाहरण :** निम्न कुंडली में मेष, वृष और मिथुन की दृष्टियां दर्शायी गयी है।

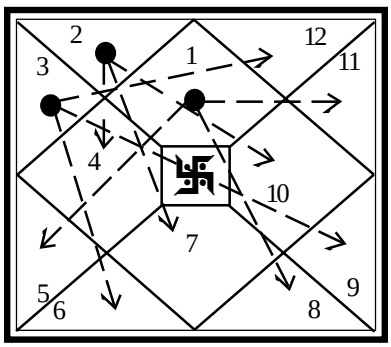

1. सभी चर राशियां अपने से अगले भाव की स्थिर राशि को छोड़कर सब स्थिर राशियों पर दृष्टि डालती है।

**मेष** : सिंह, वृश्चिक, कुंभ पर दृष्टि डालती है।

**कर्क** : वृश्चिक, कुंभ, वृष पर दृष्टि डालती है।

**तुला** : कुंभ, वृष, सिंह पर दृष्टि डालती है।

**मकर** : वृष, सिंह, वृश्चिक पर दृष्टि डालती है।

2. सभी स्थिर राशियां अपने से पीछे वाले भाव की चर राशि को छोड़कर बाकी सब चर राशियों पर दृष्टि डालती हैं।

**वृष** : कर्क, तुला, मकर पर दृष्टि डालती है।

**सिंह** : तुला, मकर, मेष पर दृष्टि डालती है।

**वृश्चिक**: मकर, मेष, कर्क पर दृष्टि डालती है।

**कुंभ** : मेष, कर्क, तुला पर दृष्टि डालती है।

3. सभी द्विस्वभाव राशियां एक दूसरे पर दृष्टि डालती हैं।

**मिथुन** : कन्या, धनु, मीन पर दृष्टि डालती है।

**कन्या** : धनु, मीन, मिथुन पर दृष्टि डालती है।

**धनु** : मीन, मिथुन, कन्या पर दृष्टि डालती है।

**मीन** : मिथुन, कन्या, धनु पर दृष्टि डालती है।

**उदाहरण 1**

1. पद लग्न कुंभ में स्थित है और कर्क, तुला, मेष द्वारा दृष्ट है। इन राशियों में स्थित पांच कारक, शनि–आत्मकारक, मंगल–मातृकारक, बुध–आमात्यकारक, सूर्य–पुत्रकारक तथा शुक्र–भ्रातृकारक भी पद लग्न पर दृष्टि डाल रहे हैं। कुंडली में उच्च पद का योग बना रहे हैं। यह कुंडली हिलेरी क्लिंटन की है जो बिल क्लिंटन की पत्नी हैं। निसंदेह ही जीवन में उन्हें उच्च पद प्राप्त हुआ है।

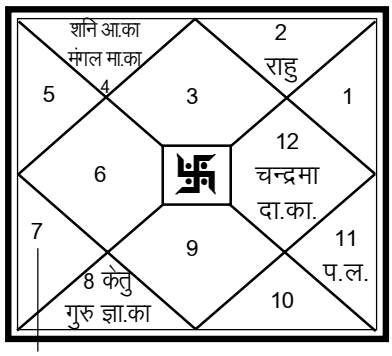


## अभ्यास

1. पाराशरी दृष्टियों और जैमिनी दृष्टियों में क्या अंतर है ?
2. विभिन्न कारक किस प्रकार दृष्टि डालते हैं ?
3. चर राशियां किस प्रकार दृष्टि डालती हैं ? उदाहरण सहित लिखें।
4. स्थिर राशियां किस प्रकार दृष्टि डालती हैं ? उदाहरण सहित बतायें।
5. द्विस्वभाव राशियां किस प्रकार दृष्टि डालती हैं ? उदाहरण सहित बतायें।

Future Point

# 5. चर दशा

जैमिनी की अनेक दशांए है जो कि राशियों की दशाएं हैं। इनमें से कुछ दशाएं किसी विशेष परिस्थित में प्रयोग की जाती हैं (Conditional Dashas), और कुछ दशाएं किसी विशेष उद्येश्य के लिये होती हैं (Specific Dashas)

जैमिनी पद्धति में चर दशा सबसे उपयोगी और लोकप्रिय है। इसका उपयोग सामान्य फलकथन में किया जाता है। इस दशा की अवधि अल्प होती है यानि 1 से 12 वर्षों के मध्य होती है। महादशा की अवधि कम होने के कारण अंतरदशा और प्रत्यंतर का अंतराल भी अल्प ही होता है। अतः किसी घटना का समय निर्धारण सटीक होता है। दूसरा लाभ यह है कि अगर जन्म समय में मामूली त्रुटि हो तो भी फलकथन करना संभव है क्योंकि दशा राशी पर आधारित है चन्द्र नक्षत्र पर नहीं।

**चर दशा का चलन दो प्रकार से होता है–**

1. क्रम से (सीधा या Direct Order) यानि–मेष, वृष, मिथुन, कर्क इत्यादि।
2. उत्क्रम से (उल्टा या Indirect Order) यानि– कर्क, मिथुन, वृष, मेष, मीन इत्यादि।

प्रत्येक राशि की दशा के वर्ष निश्चित नहीं होते हैं। इनकी गणना विभिन्न नियमों द्वारा की जाती है। यद्यपि जैमिनी पद्धति में विविध प्रकार की दशाएं होती है, इनमें चर दशा और स्थिर दशा अधिक महत्वपूर्ण हैं। चरदशा और त्रिकोण दशा द्वारा जातक के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को आंका जा सकता है। अगर साथ साथ नवांश दशा का भी उपयोग किया जाए तो सटीकता बढ़ जाती है। चर दशा और निरयणशूल दशा द्वारा जातक की आयु का आकलन संभव है।

जैमिनी पद्धति का परिचय देने का मुख्य उद्देश्य यही है कि फलित कथन के लिए विभिन्न ज्योतिष पद्धतियों का साथ साथ उपयोग किया जाए (Composite Techniques)। सर्वप्रथम पाराशरी सिद्धांतों और पाराशरी दशाओं का उपयोग करना चाहिये। अगले कदम में जैमिनी पद्धति और जैमिनी दशाओं का उपयोग कर फलकथन को और सटीक बनाना चहिये। ऐसा करने पर दोनों पद्धितियों से एक ही घटनाक्रम दृष्टिगोचर होगा और ज्योतिषी का विश्वास अपने फलकथन पर बढ़ेगा। पारंपरिक ज्योतिषी जिनके परिवार में ज्योतिष पीढ़ियों से विकसित होती आयी है अनेक विधियों के प्रयोग में पारंगत होते हैं और यही उनकी सफलता का मुख्य कारण है।

**अभ्यास**

1. विंशोत्तरी दशा की लोकप्रियता के बावजूद चर दशा का अध्ययन क्यों किया जाता है ?
2. चर दशा के उपयोग से क्या लाभ है ?
3. विंशोत्तरी और चर दशाओं में मुख्य अंतर क्या है ?
4. चर दशा का क्रम क्या है ?
5. जैमिनी की कुछ अन्य दशाऐं कौन सी है ?



Future Point

# 6. चर दशा की गणना–1

**महादशा क्रम**

जातक के जन्म से महादशा का क्रम लग्न की राशि पर निर्भर करता है।

जातक की पहली महादशा लग्न की राशी की होगी। उसके बाद :

**नियम 1**

अगर लग्नराशि **सिंह, कन्या तुला, कुंभ, मीन या मेष** हो तो दशा क्रम, क्रम से (Direct) होगा।
उदाहरणार्थ : अगर लग्न में सिंह राशि है तो महादशा का क्रम निम्न होगा।

सिंह : जन्म के समय महादशा
कन्या : द्वितीय महादशा
तुला : तृतीय महादशा
वृश्चिक : चतुर्थ महादशा
धनु : पंचम महादशा
मकर : षष्ट महादशा
कुंभ : सप्तम महादशा
मीन : अष्टम महादशा
मेष : नवम महादशा
वृष : दशम महादशा
मिथुन : एकादश महादशा
कर्क : द्वादश महादशा

कर्क के बाद महादशा का दूसरा चक्र सिंह से प्रारंभ होगा।

**नियम 2**

अगर लग्न की राशि **वृष–मिथुन–कर्क–वृश्चिक–धनु या मकर** हो तो तब महादशा क्रम, उत्क्रम से (Indirect) होगा।
उदाहरणार्थ अगर लग्न में राशि मिथुन है तब महादशा क्रम निम्न होगा।

मिथुन : जन्म के समय महादशा
वृष : द्वितीय महादशा
मेष : तृतीय महादशा
मीन : चतुर्थ महादशा
कुंभ : पंचम महादशा

Future Point

मकर : षष्ट महादशा
धनु : सप्तम महादशा
वृश्चिक : अष्टम महादशा
तुला : नवम महादशा
कन्या : दशम महादशा
सिंह : एकादश महादशा
कर्क : द्वादश महादशा
कर्क महादशा के बाद द्वितीय दशाचक्र प्रारंभ हो जाएगा।

**सारणी 1**

## क्रम वर्ग लग्न के लिये महादशा क्रम

| लग्नराशि : | सिंह | कन्या | तुला | कुंभ | मीन | मेष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 5 | 6 | 7 | 11 | 12 | 1 |

| लग्न राशी→ | सिंह | कन्या | तुला | कुंभ | मीन | मेष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महा दशा क्रम ↓ | | | | | | |
| प्रथम | 5 | 6 | 7 | 11 | 12 | 1 |
| द्वितीय | 6 | 7 | 8 | 12 | 1 | 2 |
| त्रितीय | 7 | 8 | 9 | 1 | 2 | 3 |
| चतुर्थ | 8 | 9 | 10 | 2 | 3 | 4 |
| पंचम | 9 | 10 | 11 | 3 | 4 | 5 |
| षष्ट | 10 | 11 | 12 | 4 | 5 | 6 |
| सप्तम | 11 | 12 | 1 | 5 | 6 | 7 |
| अष्टम | 12 | 1 | 2 | 6 | 7 | 8 |
| नवम | 1 | 2 | 3 | 7 | 8 | 9 |
| दशम | 2 | 3 | 4 | 8 | 9 | 10 |
| एकादश | 3 | 4 | 5 | 9 | 10 | 11 |
| द्वादश | 4 | 5 | 6 | 10 | 11 | 12 |

Future Point

## सारणी 2

## उत्क्रम वर्ग लग्न के लिये महादशा क्रम

लग्नराशि : वृष 2 मिथुन 3 कर्क 4 वृश्चिक 8 धनु 9 मकर 10

| लग्न राशी → | वृष | मिथुन | कर्क | वृश्चिक | धनु | मकर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महादशा क्रम ↓ | | | | | | |
| प्रथम | 2 | 3 | 4 | 8 | 9 | 10 |
| द्वितीय | 1 | 2 | 3 | 7 | 8 | 9 |
| तृतीय | 12 | 1 | 2 | 6 | 7 | 8 |
| चतुर्थ | 11 | 12 | 1 | 5 | 6 | 7 |
| पंचम | 10 | 11 | 12 | 4 | 5 | 6 |
| षष्ट | 9 | 10 | 11 | 3 | 4 | 5 |
| सप्तम | 8 | 9 | 10 | 2 | 3 | 4 |
| अष्टम | 7 | 8 | 9 | 1 | 2 | 3 |
| नवम | 6 | 7 | 8 | 12 | 1 | 2 |
| दशम | 5 | 6 | 7 | 11 | 12 | 1 |
| एकादश | 4 | 5 | 6 | 10 | 11 | 12 |
| द्वादश | 3 | 4 | 5 | 9 | 10 | 11 |

### अंतर्दशाएं

प्रत्येक महादशा में द्वादश राशियों की 12 अंतर्दशाएं होगी।

### प्रत्यंतर दशाएं

जिस प्रकार प्रत्येक महादशा में 12 अंतर्दशाऐं होती है, उसी प्रकार प्रत्येक अंतर्दशा में प्रत्येक राशिके 12 प्रत्यंतर होते हैं।

### अभ्यास

1. चर दशा में महादशाक्रम कैसे सुनिश्चित किया जाता है ? नियम बतायें।
2. महादशाओं में क्रम और उत्क्रम क्या होते हैं ?
3. कर्क लग्न के लए महादशा क्रम बतायें।
4. मीन लग्न के लिए महादशाक्रम लिखें।
5. (i) वृष लग्न के लिए पांचवी महादशा किस राशि की होगी ?
   (ii) मेष लग्न के लिए दसवीं महादशा किस राशि की होगी ?
   (iii) कन्या लग्न के लिए मकर दशा के बाद कौन सी दशा आयेगी ?
   (iv) वृश्चिक लग्न के लिए धनु दशा के बाद कौन सी दशा आयेगी ?

Future Point

# 7. चर दशा की गणना–2

**अंतर्दशा क्रम :**

प्रश्न : अंतर्दशा का क्रम कैसे रहता है ?

उत्तर : अंतर्दशा का क्रम महादशा के समान ही रहता है।

**नियम 1**

क्रम से चलने वाली लग्न राशि की अंतर्दशा का क्रम भी सीधा रहेगा।

यानि–सिंह, कन्या, तुला, कुंभ, मीन और मेष राशियों की अंतर्दशा का क्रम सीधा रहेगा।

**नियम 2**

उत्क्रम से चलने वाली लग्न राशि की अंतर्दशा का क्रम भी उल्टा रहेगा।

अतः वृष, मिथुन, कर्क, वृश्चिक, धनु और मकर राशियों की अंतर्दशा का क्रम उल्टा रहेगा।

**नियम 3**

प्रत्येक राशी की महादशा में उसकी अपनी राशि की अंतर्दशा अंत में आती है।

**उदाहरण 1 :**

**सिंह महादशा** (क्रम वर्ग–Direct Order)

- अंतर्दशा क्रम सीधा रहेगा।
- सिंह–सिंह अंत में आयेगी।

**सिंह महादशा**

प्रथम अंतर्दशा–कन्या

द्वितीय अंतर्दशा–तुला

तृतीय अंतर्दशा–वृश्चिक

चतुर्थ अंतर्दशा–धनु

पंचम अंतर्दशा–मकर

Future Point

षष्ठ अंतर्दशा–कुंभ

सप्तम अंतर्दशा–मीन

अष्टम अंतर्दशा–मेष

नवम अंतर्दशा–वृष

दशम अंतर्दशा–मिथुन

एकादश अंतर्दशा–कर्क

द्वादश अंतर्दशा–सिंह

**उदाहरण 2**

**वृश्चिक महादशा**

(उत्क्रम वर्ग–Indirect Order)

- अंतर्दशाएं उल्टी चलेगी
- वृश्चिक–वृश्चिक सबसे अंत में आयेगी

**वृश्चिक महादशा**

प्रथम अंतर्दशा–तुला

द्वितीय अंतर्दशा–कन्या

तृतीय अंतर्दशा–सिंह

चतुर्थ अंतर्दशा–कर्क

पंचम अंतर्दशा मिथुन

षष्ठ अंतर्दशा–वृष

सप्तम अंतर्दशा–मेष

अष्टम अंतर्दशा–मीन

नवम अंतर्दशा–कुंभ

दशम अंतर्दशा–मकर

एकादश अंतर्दशा–धनु

द्वादश अंतर्दशा–वृश्चिक

Future Point

## सारणी 3

## अन्तर दशाएं–क्रम वर्ग (Direct order group)

| | सिंह- | कन्या- | तुला- | कुंभ- | मीन- | मेष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 5- | 6- | 7- | 11- | 12- | 1 |

| महा दशा→ | सिंह | कन्या | तुला | कुंभ | मीन | मेष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्तर दशा ↓ | | | | | | |
| प्रथम | 6 | 7 | 8 | 12 | 1 | 2 |
| द्वितीय | 7 | 8 | 9 | 1 | 2 | 3 |
| तृतीय | 8 | 9 | 10 | 2 | 3 | 4 |
| चतुर्थ | 9 | 10 | 11 | 3 | 4 | 5 |
| पंचम | 10 | 11 | 12 | 4 | 5 | 6 |
| षष्टम | 11 | 12 | 1 | 5 | 6 | 7 |
| सप्तम | 12 | 1 | 2 | 6 | 7 | 8 |
| अष्टम | 1 | 2 | 3 | 7 | 8 | 9 |
| नवम | 2 | 3 | 4 | 8 | 9 | 10 |
| दशम | 3 | 4 | 5 | 9 | 10 | 11 |
| एकाशद | 4 | 5 | 6 | 10 | 11 | 12 |
| द्वादश | 5 | 6 | 7 | 11 | 12 | 1 |

Future Point

## सारणी 4

## अन्तर दशाएं–उत्क्रम वर्ग (Indirect order group)

| | वृष- | मिथुन- | कर्क- | वृश्चिक- | धनु- | मकर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 2- | 3- | 4- | 8- | 9- | 10 |

| महा दशा→ | वृष | मिथुन | कर्क | वृश्चिक | धनु | मकर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्तरदशा↓ | | | | | | |
| प्रथम | 1 | 2 | 3 | 7 | 8 | 9 |
| द्वितीय | 12 | 1 | 2 | 6 | 7 | 8 |
| तृतीय | 11 | 12 | 1 | 5 | 6 | 7 |
| चतुर्थ | 10 | 11 | 12 | 4 | 5 | 6 |
| पंचम | 9 | 10 | 11 | 3 | 4 | 5 |
| षष्टम | 8 | 9 | 10 | 2 | 3 | 4 |
| सप्तम | 7 | 8 | 9 | 1 | 2 | 3 |
| अष्टम | 6 | 7 | 8 | 12 | 1 | 2 |
| नवम | 5 | 6 | 7 | 11 | 12 | 1 |
| दशम | 4 | 5 | 6 | 10 | 11 | 12 |
| एकादश | 3 | 4 | 5 | 9 | 10 | 11 |
| द्वादश | 2 | 3 | 4 | 8 | 9 | 10 |

### अभ्यास

1. प्रत्येक चर महादशा में अंतर्दशा का क्रम क्या रहता है ?
2. अंतर्दशा के क्रम निर्धारण के तीन नियम क्या हैं ?
3. वृष लग्न के लिए:

(i) द्वितीय भाव की राशि की अंतर दशांए बनाएं।

(ii) षष्ठ भाव की राशि की अंतर्दशाएं बनाएं।

4. निम्न राशियों की अंतर्दशाएं क्रम से होगी या उत्क्रम से ?

(i) मकर (ii) मीन (iii) कर्क (iv) कन्या (v) कुंभ (vi) मेष

Future Point

# 8. चरदशा की गणना–3

दशा का चलन निर्धारित करने के बाद दशा की अवधि निर्धारित की जाती है।

**दशा अवधि की गणना**

यह पहले ही उल्लेख हो चुका है कि चर दशा के वर्ष निश्चित नहीं होते हैं, उनकी गणना कुछ नियमों के अंतर्गत की जाती है।

बारह राशियों को 6–6 राशियों के दो वर्गों में विभक्त किया गया है, दशा की अवधि की गणना करने के लिये। पहले वर्ग में विषमपद समूह की सीधे क्रम वाली राशियां हैं । दूसरे वर्ग में समपद समूह की विपरीत क्रम वाली राशियां सम्मिलित हैं।

विषमपद (सीधा क्रम) वर्ग की राशियां हैं मेष, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक और धनु (1–2–3–7–8–9) Direct Counting.

समपद (विपरीत क्रम) वर्ग की राशियां हैं मिथुन, सिंह, कन्या, मकर, कुंभ, मीन (4–5–6–10–11–12) Indirect Counting.

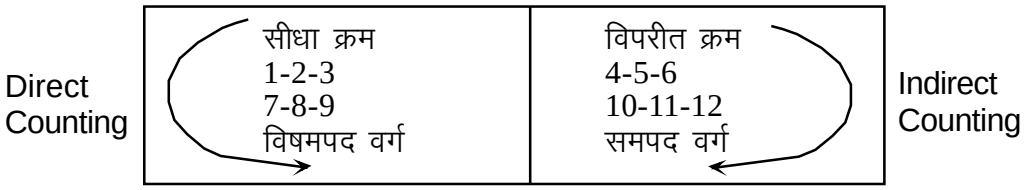


**विशेष :**

- **यह नियम केवल दशा वर्ष की गणना के लिये है; इन्हें दशा क्रम के नियमों से प्रथक ही समझें। दोनो नियमों में Confusion नहीं होना चाहिये।**
- **सभी विषम राशियों की गणना सीधे क्रम से नहीं होती है, सिंह तथा कुंभ की गणना विपरीत होती है।**
- **सभी सम राशियों की गणना विपरीत नहीं होती है, वृष और वृश्चिक की गणना सीधी होती है। इस मत का खुलासा जैमिनी सूत्र के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद के 25–26–27 वे सूत्र में किया गया है।**

**दशा वर्षों की गणना**

1. अध्याय 6 में वर्णित दशा क्रम को लिखें।
2. सीधे क्रम की राशियों और विपरीत क्रम की राशियों को लिखें।
3. सीधे क्रम के वर्ग में राशि से राशिस्वामी तक सीधे क्रम में गिनें।
4. विपरीत क्रम के वर्ग में राशि से राशिस्वामी तक विपरीत क्रम में गिनें।
5. कुल संख्या में से 1 घटायें। प्राप्त संख्या दशा वर्ष दर्शाती है।
6. अगर राशिस्वामी अपनी राशि में स्थित है तो राशिदशा 12 वर्ष की होगी।



Future Point

7. उपरोक्त नियम वृश्चिक और कुंभ को छोड़कर अन्य सभी दशाओं पर लागू होते हैं। वृश्चिक और कुंभ के 2–2 राशिस्वामी होते हैं। वृश्चिक के स्वामी मंगल और केतु है। कुंभ के स्वामी शनि और राहु हैं। इसलिए वृश्चिक और कुंभ के लिये विशेष नियम हैं।

**वृश्चिक (सीधा क्रम):**

**नियम 1**– मंगल और केतु को देखें। अगर मंगल वृश्चिक में हो और केतु किसी अन्य राशि में, तब मंगल को छोड़ दें और केतु तक सीधे क्रम से गिनें।

अगर केतु वृश्चिक में है और मंगल अन्यत्र स्थित हैं तो केतु छोड़ दें और मंगल तक सीधे क्रम से गिनें।

**नियम 2**– अगर मंगल और केतु दोनों ही वृश्चिक में स्थित हैं तो दशाकाल पूर्ण 12 वर्ष रहेगा।

**नियम 3**– अगर मंगल और केतु दोनों वृश्चिक में स्थित नहीं हैं, तब पता लगायें कि दोनों में कौन अधिक बली है, फिर उस ग्रह तक गिनें।

- जिस ग्रह के साथ अधिक ग्रह स्थित हैं, अधिक बली होगा।
- अगर मंगल और केतु के साथ बराबर संख्या के ग्रह स्थित हैं तो मंगल और केतु में जिसके अंश अधिक है, वह बली माना जाएगा।
- अगर मंगल और केतु दोनों के साथ कोई ग्रह स्थित नहीं है तो जिसके अंश अधिक होंगे, वह बली होगा।
- अगर दोनों के अंश समान हों तो मिनट व सैकंड के आधार पर निर्णय करें।

**कुंभ (विपरीत क्रम)**

कुंभ के स्वामी शनि और राहु हैं। गणनाविधि वृश्चिक के समान ही रहेगी मगर दो अंतर हैं।

1. शनि और राहु को देखा जाएगा।
2. गिनती का क्रम विपरीत रहेगा।

**उदाहरण 1**

**जन्म तिथि –26/10/1947**

**जन्म समय– रात 8 बजे**

**जन्म स्थान– शिकागो, यू.एस.ए.**

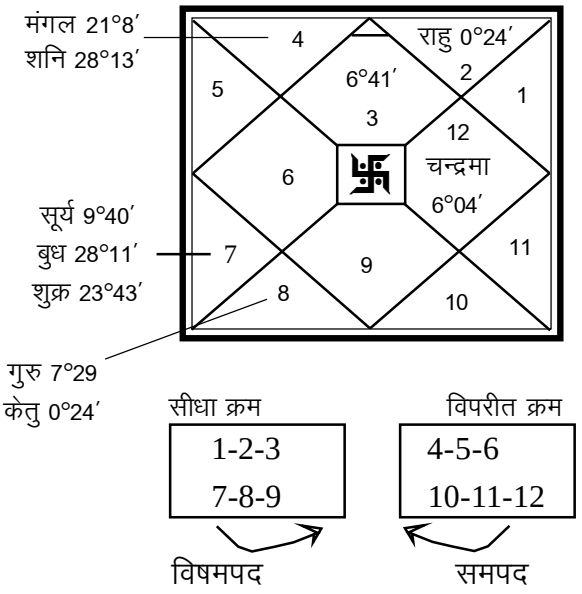


Future Point

Future Point

## दशा का क्रम और वर्ष

लग्न में मिथुन राशि है अतः महा दशाक्रम विपरीत रहेगा।

| महादशा | दशा वर्ष | | दशा गणना |
|---|---|---|---|
| मिथुन | 4 | - | सीधी |
| वृष | 5 | - | " |
| मेष | 3 | - | " |
| मीन | 4 | - | विपरीत |
| कुंभ | 7 | शनि तक | " |
| मकर | 6 | - | " |
| धनु | 11 | - | सीधी |
| वृश्चिक | 8 | मंगल तक | " |
| तुला | 12 | - | " |
| कन्या | 11 | - | विपरीत |
| सिंह | 10 | - | " |
| कर्क | 4 | - | " |

**उदाहरण 1**

**चर दशा**

| महादशा | दशा वर्ष | तिथि | मास | वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | 26 | 10 | 1947 | जन्मतिथित (D.O.B.) |
| मिथुन | (4) | 26 | 10 | 1951 | तक |
| वृष | (5) | 26 | 10 | 1956 | " |
| मेष | (3) | 26 | 10 | 1959 | " |
| मीन | (4) | 26 | 10 | 1963 | " |
| कुंभ | (7) | 26 | 10 | 1970 | " |
| मकर | (6) | 26 | 10 | 1976 | " |
| धनु | (11) | 26 | 10 | 1987 | " |
| वृश्चिक | (8) | 26 | 10 | 1995 | " |
| तुला | (12) | 26 | 10 | 2007 | " |
| कन्या | (11) | 26 | 10 | 2018 | " |
| सिंह | (10) | 26 | 10 | 2028 | " |
| कर्क | (4) | 26 | 10 | 2032 | " |

तारीख दशा का समाप्तिकाल दर्शाती है।

**उदाहरण 2**

जन्मतिथि 11.10.1942

जन्मसमय शाम के 3 बजे (युद्ध समय संशोधित)

जन्मस्थान इलाहाबाद

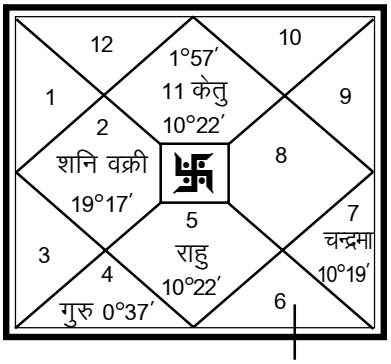


सूर्य 24°22′
बुध 23°39′ - पू. अस्त
शुक्र 15°12′ - अस्त
मंगल 22°37′ - पू. अस्त

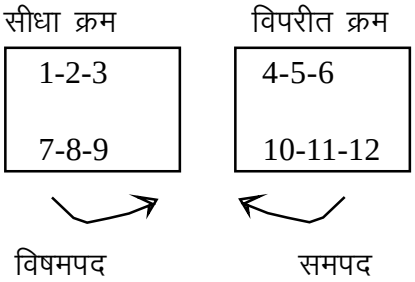


Future Point

Future Point

**दशाक्रम और वर्ष**

| महादशा | दशा वर्ष | | दशा क्रम |
|---|---|---|---|
| कुंभ | 9 | शनि तक | विपरीत |
| मीन | 8 | - | ,, |
| मेष | 5 | - | सीधी |
| वृष | 4 | - | ,, |
| मिथुन | 3 | - | ,, |
| कर्क | 9 | - | विपरीत |
| सिंह | 11 | - | ,, |
| कन्या | 12 | स्वामी स्थित है | ,, |
| तुला | 11 | - | सीधी |
| वृश्चिक | 10 | मंगल तक | ,, |
| धनु | 7 | - | ,, |
| मकर | 8 | - | विपरीत |

**चरदशा**

| | | दिन | मास | वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|
| महादशा | दशा वर्ष | 11 | 10 | 1942 | जन्मतिथि |
| कुंभ | (9) | 11 | 10 | 1951 | तक |
| मीन | (8) | 11 | 10 | 1959 | " |
| मेष | (5) | 11 | 10 | 1964 | " |
| वृष | (4) | 11 | 10 | 1968 | " |
| मिथुन | (3) | 11 | 10 | 1971 | " |
| कर्क | (9) | 11 | 10 | 1980 | " |
| सिंह | (11) | 11 | 10 | 1991 | " |
| कन्या | (12) | 11 | 10 | 2003 | " |
| तुला | (11) | 11 | 10 | 2014 | " |
| वृश्चिक | (10) | 11 | 10 | 2024 | " |
| धनु | (7) | 11 | 10 | 2031 | " |
| मकर | (8) | 11 | 10 | 2039 | " |

### अंतर्दशा की गणना

- अंतर्दशा की अवधि उतने मास होगी जितने वर्ष महादशा की अवधि है।
- **सभी 12 अंतर्दशाओं की अवधि समान होगी।** अलग–अलग अंतर्दशा की अवधि की गणना की आवश्यकता नहीं है।

### उदाहरणार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| महादशा | – 12 वर्ष | प्रत्येक अंतर्दशा काल | – 1 वर्ष |
| महादशा | – 11 वर्ष | प्रत्येक अंतर्दशा काल | – 11 मास |
| महादशा | – 10 वर्ष | प्रत्येक अंतर्दशा काल | – 10 मास |
| महादशा | – 9 वर्ष | प्रत्येक अंतर्दशा काल | – 9 मास |
| महादशा | – 8 वर्ष | प्रत्येक अंतर्दशा काल | – 8 मास |
| महादशा | – 7 वर्ष | प्रत्येक अंतर्दशा काल | – 7 मास |

### प्रत्यंतर दशा की गणना

चरदशा की अवधि अल्प होती है। अतः अंतर्दशा तक गणना पर्याप्त है। अगर प्रत्यंतर दशा की गणना आवश्यक है तो अंतर्दशा की अवधि दिनों में बदल कर 12 राशियों से भाग दें। प्रत्यंतर दशा, दिनों और घंटों में आ जाएगी।

### उदाहरणार्थ

- अगर अंतरदशा काल 12 मास है

  12 मास = 360 दिन (दशा गणना में 1 वर्ष सामान्यतः 360 दिन का लिया जाता है)

  360 / 12 = 30 दिन, अतः प्रत्येक प्रत्यंतर 30 दिनों का होगा।

  परन्तु यदि 365 दिन का वर्ष लिया जा रहा है तोः

  $$\frac{365}{12} = 30.416666 \text{ दिन}$$

  = 30 दिन 10 घंटे का एक प्रत्यंतर होगा।

- अगर अंतर्दशा काल 11 मास है

  11 मास = 330 दिन

  330 / 12 = 27 दिन 12 घंटे प्रत्येक प्रत्यंतरदशा की अवधि होगी।

### अभ्यास

1. विषमपद राशियां कौन कौन सी हैं ?
2. समपद राशियां कौन कौन सी हैं ?
3. विषमपद और समपद राशियों की गिनती किस प्रकार की जाती है ?



Future Point

4. प्रत्येक राशि के दशा वर्षों की गणना कैसे की जाती है ?
5. वृश्चिक और कुंभ राशियों के दशावर्ष की गणना की विधि भिन्न क्यों हैं ?
6. वृश्चिक के दशावर्षों की गणनाविधि क्या है ?
7. कुंभ के दशावर्षों की गणनाविधि क्या है ?
8. निम्न कुंडली की चरदशा की गणना करें।
   जन्मतिथि 6–8–2002 जन्म समय 14.41 बजे
   जन्म स्थान दिल्ली

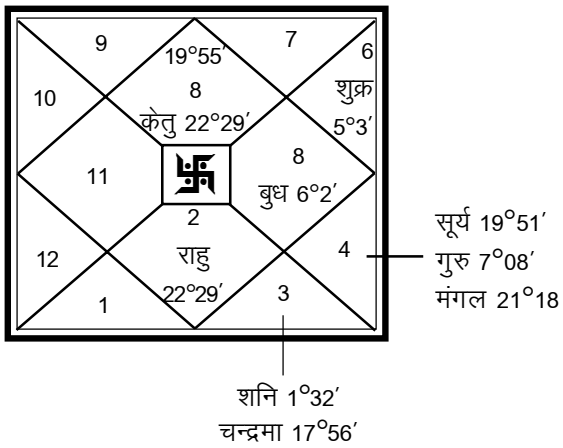


9. अगर सिंह महादशा 10 वर्ष है तो मकर अंतर्दशा की अवधि क्या होगी ?

Future Point

# 9. जैमिनी योग

ग्रहों और भावों के आपसी संबंधों से योग बनते हैं। यह संबंध स्थिति, दृष्टि, युति और विनिमय के आधार पर होता है। योग जातक के प्रारब्ध की सूचना देते हैं तथा अपने परिणाम उचित दशा के आने पर प्रदान करते हैं।

जैमिनी सूत्र में विभिन्न योगों का वर्णन है। यहां कुछ प्रमुख योगों का वर्णन किया जाएगा।

**(अ)आत्मकारक** का संबंध कुछ महत्वपूर्ण कारकों या भावाधिपतियों से हो तो राजयोग होता है।

(i) आत्मकारक और आमात्यकारक का संबंध

(ii) आत्मकारक और पुत्रकारक का संबंध

(iii)आत्मकारक और दाराकारक का संबंध

(iv)आत्मकारक और पंचमेश का संबंध

**(आ) आमात्यकारक** का संबंध भी उपरोक्त कारकों आदि से हो तो राजयोग होता है।

(i) आमात्यकारक और पुत्रकारक का संबंध

(ii) आमात्यकारक और दाराकारक का संबंध

(iii)आमात्यकारक और पंचमेश का संबंध

**(इ) पुत्रकारक** द्वारा निर्मित राजयोग

(i) पुत्रकारक और पंचमेश का संबंध

(ii) पुत्रकारक और दाराकारक का संबंध

**(ई) दाराकारक और पंचमेश** का संबंध भी राजयोग कारक होता है।

**अन्य राजयोग :**

(i) अगर जन्म लग्न, होरालग्न, घटिका लग्न, नवांश या द्रेष्काण लग्न के प्रथम व सप्तम भाव पर एक ही ग्रह की दृष्टि हो तो यह महान राजयोग होता है। अर्थ यह है कि यदि कुंडली का कोई एक ही ग्रह, जन्म लग्न, होरा लग्न, घटिका लग्न, नवांश या द्रेकाण लग्न तथा उनसे सप्तम भाव को दृष्ट करता है तो एक महान राजयोग बनता है।

(ii) अगर चंद्र और शुक्र का आपसी संबंध है या एक दूसरे से तीसरे भाव में स्थित हैं तो यह एक राजयोग तथा वाहन योग है।

(iii)मंगल, शुक्र और केतु यदि परिस्पर दृष्टि में हों या एक दूसरे से 3–11 में हों तो जातक विभिन्न सुखों का भोग करता है या आध्यात्मिकता में रुचि लेता है।



Future Point

(iv) अगर चंद्र और शुक्र आत्मकारक से चतुर्थ भाव में हों तो जातक राजमहल के समस्त सम्मानों से विभूषित होता है। जैसे कि चामर, छत्र, नगाड़ा आदि बाजे। आज के ज़माने में सरकारी झंडा, सरकारी नम्बर प्लेट, बीकन लाइट, साइरन वगैरा।

**(ऊ) अशुभ योग**

**(i) दरिद्र योग :**

6, 8, 12वें भाव में शुभग्रह, केंद्र, त्रिकोण में अशुभ ग्रह स्थित हों तो जातक दरिद्र होता है।

**(ii) जैमिनी केमद्रुमयोग :**

कारकांश लग्न, जन्म लग्न या आरुढ़ लग्न से दूसरे और आठवें भाव में बराबर संख्या में अशुभ ग्रह स्थित हों तो केमद्रुम योग का निर्माण होता है। इसके कारण जीवन साथी का वियोग, आर्थिक हानि तथा साख में भारी गिरावट का सामना करना पड़ता है।

–अगर चंद्रमा भी इन अशुभ ग्रहों पर दृष्टि डाले तो यह योग और भी अधिक प्रबल हो जाता है।

**(iii) कारावास योग (बंधन योग) :**

लग्न या कारकांश लग्न से द्वितीय और द्वादश, या तृतीय और एकादश या चतुर्थ और दशम या पंचम और नवम या षष्ट और द्वादश भावों में बराबर संख्या के ग्रह स्थित हों तो जातक को कारावास हो सकता है।

अर्थात 2 – 12 भाव
या
3 – 11 भाव
या
5 – 9 भाव
या
6 – 12 भाव
या
6 – 8 भाव (कुछ विद्वानों के अनुसार)

में बराबर की संख्या के ग्रह स्थित हों तो बंधन या कारावास योग बनता है।

यदि इन ग्रहों पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो सज़ा क्रूर व कठोर होगी। पर यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो कारावास नाम मात्र की होगी या अस्थाई होगी। यदि यह योग एक उत्तम कुंडली में मिले तो सम्भव है कि जातक नेक उद्येश्य के लिये जेल गया हो। या यह योग अध्यात्मिकता की ओर भी संकेत कर सकता है।

कभी–कभी ऐसे योग के उपस्थित होते हुए भी जातक जेल नहीं जाता है, किन्तु वो किसी अन्य प्रकार से कष्ट उठाता है। बन्धन के कई अन्य अर्थ हैं जैसे किसी प्रकार के शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, बौद्धिक, शैक्षणिक आभाव, आर्थिक आभाव, विवशता, अथवा विघ्न बाधा भी बन्धन के ही रुप हैं। (Some kind of constraint).



Future Point

# योगों के उदाहरण

## राजयोग

### उदाहरण 1

### हिलेरी क्लिंटन

लग्न

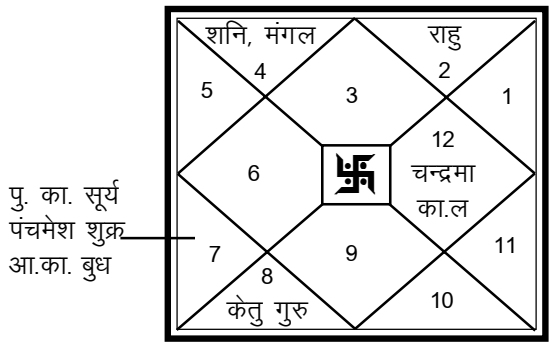


नवमांश

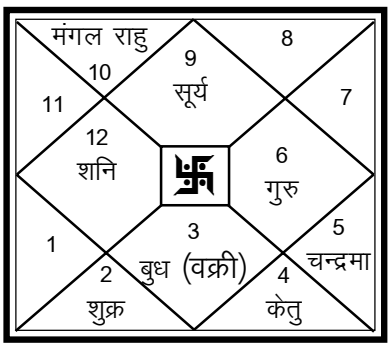


आमात्यकारक बुध ने पंचम भाव में पंचमेश शुक्र और पुत्रकारक सूर्य के साथ उत्तम राजयोग का निर्माण किया है।

### उदाहरण 2

### लता मंगेशकर

लग्न

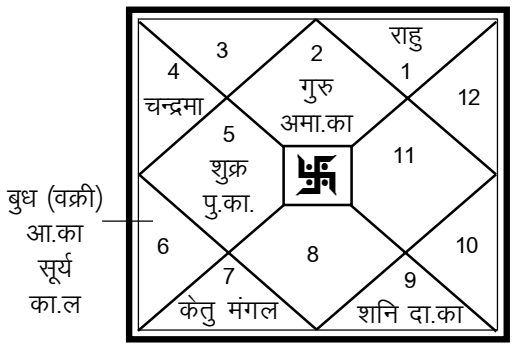


नवमांश

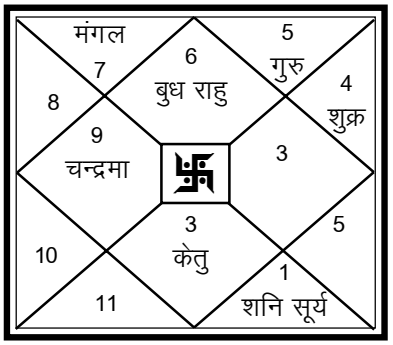


पंचमेश और आत्मकारक बुध पंचम भाव में स्थित है और दाराकारक शनि से दृष्ट होकर राजयोग का सृजन कर रहा है।

इन दोनो कुंडलियों के मुख्य राजयोग पूर्व पुण्य के पंचम भाव में बन रहे हैं।



Future Point

## उदाहरण 3

### अमिताभ बच्चन

लग्न

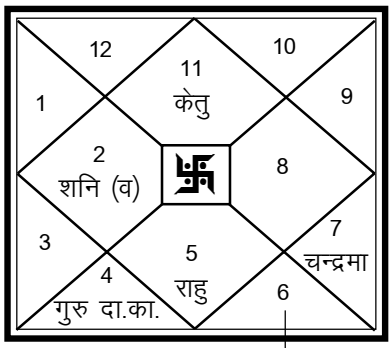


सूर्य–आ.का., बुध–आमा.का.
मंगल, शुक्र–पु.का

नवमांश

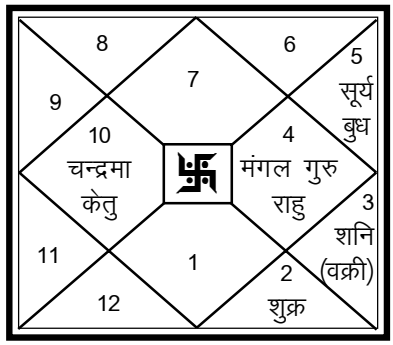


आमात्यकारक और पंचमेश बुध, आत्माकारक सूर्य और पुत्रकारक शुक्र अष्टम भाव में एक साथ हैं। और राजयोग बना रहे हैं। राजयोग अष्टम भाव में बने हैं इसलिए जीवन में कुछ उतार चढ़ाव रहे हैं।

## उदाहरण 4

### राजीव गांधी

लग्न

सूर्य
गुरु–पु.का.
शुक्र–अमा. का.
बुध–आ.का.
चंद्र

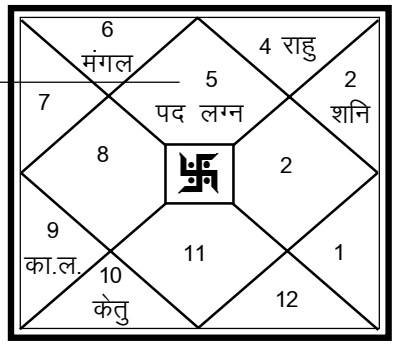


नवमांश

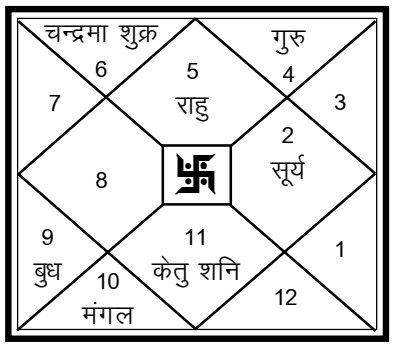


1. आत्मकारक बुध, आमात्यकारक शुक्र, पुत्रकारक और पंचमेश वृहस्पति लग्न में स्थित होकर शक्तिशाली राजयोग का निर्माण कर रहे हैं। लग्न भी पद लग्न है और कारकांश लग्न से नवम है। अगर देखा जाए तो वास्तविकता में लग्न में 6 राजयोग बन रहे हैं।
   (i) आत्मकारक + आमात्यकारक
   (ii) आत्मकारक + पंचमेश
   (iii) आमात्यकारक + पंचमेश
   (iv) आत्मकारक + पुत्रकारक
   (v) आमात्यकारक + पुत्रकारक
   (vi) चन्द्र + शुक्र

   राजयोग किस भाव में बन रहे हैं यह भी राजयोगों के स्तर को दिखाता है।



Future Point

## उदाहरण–5

## जॉर्ज बुश

लग्न

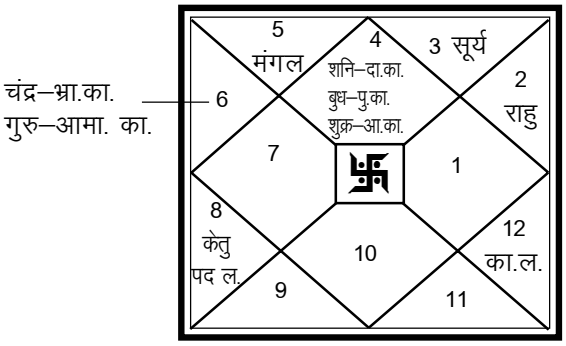




नवमास

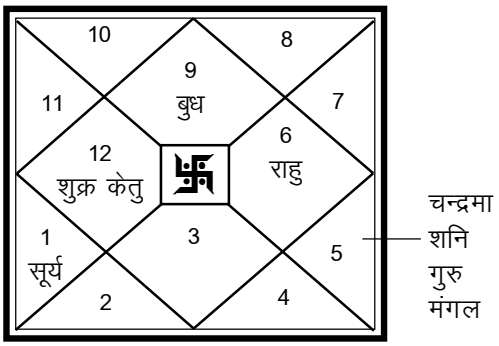




1. लग्न में आत्मकारक शुक्र, पुत्रकारक बुध और दाराकारक शनि शक्तिशाली राजयोग का स्रजन कर रहे हैं।
2. लग्न कारकांश से पंचम और पद लग्न नवम भाव है।
3. कारकांश से सप्तम भाव में सुंदर पाराशरी गजकेसरी योग का निर्माण हुआ है जो सम्मान और पद प्राप्ति को दर्शाता है। बृहस्पति आमात्यकारक है और चंद्र भ्रातृकारक। इस प्रकार पराशर और जैमिनी के नियमों का समन्वय किया जा सकता है।

**नवमांश** : राजयोगों का अध्ययन करते समय नवमांश पर भी ध्यान देना चाहिए। अगर योग नवमांश में भी उपस्थित हों या उन्हें बल मिल रहा हो तब योगों का पूर्णफल मिलता है अन्यथा आंशिक फल ही प्राप्त होगा।

## जेल जाने के योग (कारावास योग)

### उदाहरण–6

### जवाहर लाल नेहरु

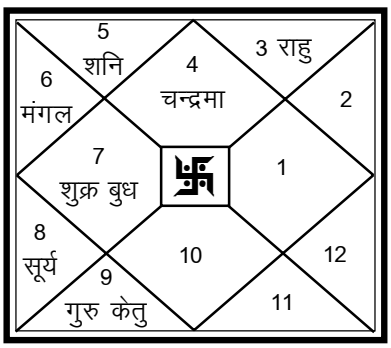




Future Point

लग्न से द्वितीय और द्वादश भावों में बराबर संख्या में ग्रह स्थित हैं। वे भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल गये।

**उदाहरण–7**

**इंदिरा गांधी**

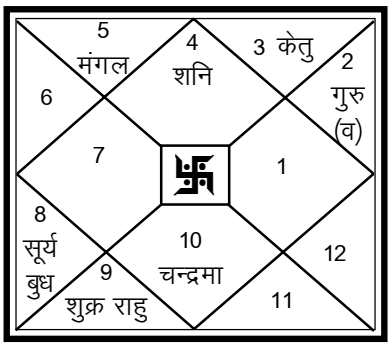


द्वितीय और द्वादश भावों में ग्रह संख्या समान है। उनकी दिसंबर 1978 में Breach of privilege of parliament के आरोप में जेल जाने की प्रबल संभावना बन गयी थी। परन्तु वे जेल यात्रा से बच गयी।

**उदाहरण–8**

**महात्मा गांधी**

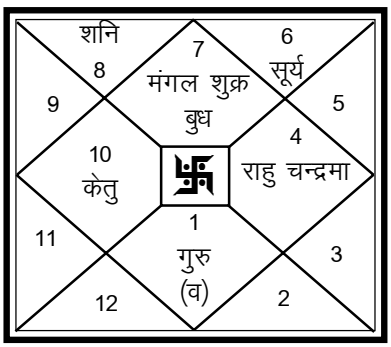


द्वितीय और द्वादश भावों में ग्रहसंख्या समान है। महात्मा गांधी ने अनेकों बार लम्बे समय के लिए जेलयात्रा की मगर उनका उद्देश्य महान था क्योंकि उनका संघर्ष देश की स्वतंत्रता के लिए था।




Future Point

## उदाहरण–9

### चार्ल्स शोभराज

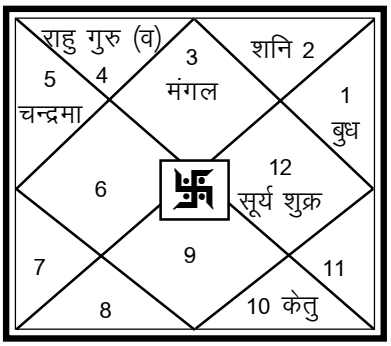


तृतीय और एकादश भावों में ग्रहसंख्या समान है। शोभराज कुख्यात अपराधी है। उसका पूरा जीवन जेल जाने और रिहाई में ही बीता है।

## उदाहरण–10

### हर्षद मेहता

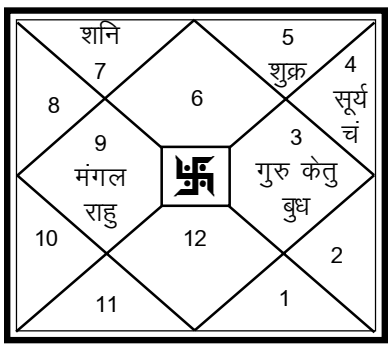


द्वितीय और द्वादश भावों में ग्रहसंख्या समान है। हर्षद मेहता कुख्यात शेयर दलाल थे। उन्हें कारावास हुआ जहां उनकी मृत्यु भी हो गयी।

हिलेरी क्लिंटन, राजीव गांधी तथा जार्ज बुश की कुंडलियों में भी बंधन योग उपस्थित है। हिलेरी क्लिंटन तथा राजीव गांधी ने अन्य प्रकार से कष्ट भोगे हैं, किंतु जार्ज बुश के लिये अभी तक प्रत्यक्ष रुप से ऐसा कुछ कहा नहीं जा सकता है।

टिप्पडी : जैमिनी योगों के लिए सामान्यतः जैमिनी दृष्टियों का विचार करना चाहिए। परंतु अगर कोई शक्तिशाली योग विद्यमान हो जिसमें पाराशरी दृष्टि भी मौजूद हो तो पाराशरी दृष्टियों पर भी ध्यान देना चाहिए। इस प्रकार जैमिनी का पराशरी के साथ समन्वय किया जा सकता है।



Future Point

## अभ्यास

1. जन्मपत्रिका में योगों का निर्माण कैसे होता है ? उनसे परिणाम कब प्राप्त होते हैं ?
2. जैमिनी पद्धति में राजयोगों का निर्माण किस प्रकार होता है ? उदाहरण दें।
3. राजयोग पूर्ण फल कब देते हैं और कब नहीं ?
4. जैमिनी केमद्रुम योग क्या है ?
5. कारावास होने के योग का एक उदाहरण दें।
6. दरिद्र योग का निर्माण कैसे होता है ?

Future Point

# 10. कारकांश का महत्व

**कारकांश**

नवांश कुंडली में आत्मकारक जिस राशि में स्थित होता है वही राशि लग्नकुंडली में **कारकांश** लग्न कहलाती है। नवांश कुंडली में वह राशि **स्वांश** कहलाती है।

जैमिनी पद्धति में कारकांश कुंडली विश्लेषण का प्रारम्भिक बिन्दु है। यह लग्नकुंडली के लग्न के समकक्ष है। कारकांश लग्न से प्रत्येक भाव का विवेचन उसी प्रकार किया जाता है जैस जन्म लग्न से प्रत्येक भाव का अध्ययन।

**उदाहरणार्थ**

कारकांश लग्न से पंचम भाव शिक्षा और सन्तान के लिए देखा जाता है यह कारकांश लग्न से सप्तम भाव विवाह के विश्लेषण के लिए उपयुक्त है।

कारकांश की राशि जातक के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करती है।

**टिप्पडी :**

1. कारकांश विवेचन में नियमों का प्रयोग विस्तृत (Broad Minded) रुप से करना चाहिये।
2. विश्लेषण आधुनिक संदर्भ में देश–काल–पात्र के अनुसार होना चाहिए।
3. अधिकांश प्राचीन ज्योतिष मनीषियों ने योगों के नकारात्मक स्वरुप को ही महत्व दिया है। आधुनिक काल में ज्योतिष द्वारा सकारात्मक भविष्यकथन की आवश्यकता है।

## विभिन्न राशियों में कारकांश

**मेष**

- जातक के जीवन पर चूहे बिल्ली के प्रकार के पशुओं का शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव शुभ होगा कि अशुभ, यह कारकांश के शुभाशुभ संबंधों पर निर्भर करता है।

**वृष**

- जातक पर चौपाए जानवरों का शुभ या अशुभ प्रभाव पड़ता है। इसका अर्थ खेती, दुग्ध व्यवसाय, खाद्य पदार्थ, होटल, वाहन, विलासिता के साधन आदि से लाभ है। अन्यथा जातक को चौपाये जानवरों से हानि भी हो सकती है।

**मिथुन**

जातक को त्वचारोग या मोटापे से कष्ट होता है। अन्यथा वह त्वचारोग विशेषज्ञ या वजन घटाने के केंद्र का मालिक हो सकता है। वह एक गायक या विचारक हो भी सकता है।



Future Point

**कर्क**

जातक पर जल का प्रभाव पड़ता है और वह कोढ़ से त्रस्त हो सकता है।
एक अन्य सूत्र के अनुसार कारकांश कर्क में हो तो जातक व्यापारी होता है। वह नाविक, मछुआरा, शुद्ध जल का निर्माता, निर्यातक या सैलानी भी हो सकता है।

**सिंह**

जातक पर पशुओं का प्रभाव पड़ता है। जीवन में उतार चढ़ाव आता है। ऊंचे ओहदे या ऊंची स्थिति से जातक बिल्कुल नीचे गिर सकते हैं। दुर्घटना भी संभव है। मगर इसका अर्थ यह भी है कि वे उच्चस्तर को प्राप्त करते हैं तभी नीचे गिरना सम्भव है।

**कन्या**

कन्या के परिणाम मिथुन के समान रहते हैं। त्वचा की बीमारी या मोटापा हो सकते हैं। आग या चिंगारियों से हानि संभव है।

अथवा जातक त्वचा रोगों का इलाज करने वाला डॉक्टर भी हो सकता है।

**तुला**

जातक का भाग्य व्यापार से निर्मित होता है। वह व्यापारी हो सकता है। आधुनिक युग में वह सौन्दर्य, कला, टेलीविजन, फिल्म, वाहन आदि से संबद्ध हो सकता है।

**वृश्चिक**

जातक पर पानी में रहने वाले जंतुओं, विशेषकर रेंगने वाले जीवों का प्रभाव पड़ता है। वह मां के दूध से वंचित भी हो सकता है। उसका पालन पोषण पशुदुग्ध, डिब्बे के दूध या आया द्वारा हो सकता है। ऐसे जातक को विष या विषैली दवाइयों से या इन्जेक्शन से आघात लग सकता है। (Reaction to medicines or injection)

**धनु**

धनु कोदंड राशी है तथा दंड देती है।
जातक घोड़े से या ऊंचाई से गिरकर या वाहन से कष्ट पाता है। उच्च पद से गिरावट भी संभव है। जातक ऊंचाई से नीचे गिरता है। सिंह के समान, धनु भी उतार–चढ़ाव की सूचक राशि है।

**मकर**

जातक को जलचर जीवों, हिंसक पक्षियों, ग्रहों, धूमकेतुओं, दुष्ट आत्माओं आदि से कष्ट होता है। वह गंभीर घाव, कैंसर, ग्रंथियों के प्रसार या त्वचा रोग से ग्रस्त हो सकता है।

मकर परिवर्तन की राशि है। जातक के जीवन में विभिन्न परिवर्तन आते हैं। इन परिवर्तनों का अच्छा या बुरा होना कारकांश लग्न पर पड़ने वाले शुभ/अशुभ प्रभावों पर निर्भर है।



Future Point

### कुंभ

जातक तालाब, कुंए, उद्यान, मंदिर, आश्रम, धर्मशाला तथा अन्य सामाजिक सुविधाओं का निर्माण करता है। कुंभ 'अमृत' की राशि है। जातक सत्पुरुष होता है तथा सबकी सहायता करता है। अगर कारकांश लग्न पर दुष्प्रभाव हों तो उसका स्वभाव उपरोक्त गुणों से विपरीत होता है। वो स्वार्थी होता है।

### मीन

जातक धर्म के पथ पर चलकर मोक्षमार्ग पर अग्रसर होता है। उसके विचार सात्विक होते हैं तथा वह उन्हें कार्यस्प में परिणत करता है। उसमें बलिदान की भावना होती है। जातक जीवन में कभी सन्यास भी ले सकता है।

कुंडली का अध्ययन समग्र रुप में होना चाहिए। तभी सटीकता संभव है। ***कारकांश द्वारा जातक की प्रवृत्तियों का पता चलता है। परिणाम कुंडली के अन्य विभिन्न तथ्यों पर भी निर्भर करते हैं।*** जैमिनी ने केवल तुला, कुंभ और मीन में कारकांश लग्नों की प्रशंसा की है। किन्तु अन्य लग्नों के सकारात्मक प्रभावों को जानने के लिये शोध की आवश्यकता है।

## कारकांश में स्थित विभिन्न ग्रहों का फल

### सूर्य

कारकांश लग्न में सूर्य के स्थित होने पर जातक राजा का वफादार सेवक होता है, या राज्य से उसका कुछ संबंध हो सकता है।

### चंद्र और शुक्र

अगर शुभ–चंद्र हौर शुक्र कारकांश लग्न में स्थित हैं तो जातक सब सुखों का भोग करता है। उसका व्यवसाय ज्ञान–विज्ञान से संबद्ध होता है। शुक्र–चंद्र की युति राजयोग है जो धन और सुख सुविधाओं को प्रदान करती है।

### मंगल

कारकांश लग्न में मंगल स्थित होने पर जातक का कार्य रसायन, अग्नि, धातु, उद्योग आयुध निर्माण आदि से संबंधित होता है।

### बुध

कारकांश लग्न में बुध स्थित हो तो जातक व्यापारी, जुलाहा, मूर्तिकार (शिल्पी) या कलाकार होता है। उसे प्रसिद्धि प्राप्त होती है।

### बृहस्पति

जातक विद्वान, अध्यापक, धर्मगुरु पंडित आदि होता है। वह ज्योतिषी या राजमंत्री भी हो सकता है। आधुनिक संधर्भ में बैंक या मेनेजमेन्ट से संबंधित भी हो सकता है।



Future Point

Future Point

### शुक्र

जातक सरकारी कर्मचारी, राजनीतिज्ञ या कलाकार होता है। उसका रुझान विपरीत लिंग के व्यक्तियों की ओर होता है। उसकी रति शक्ति दीर्घ आयु तक सक्षम रहती है।

### शनि

कारकांश लग्न में या उससे केंद्र में शनि के स्थित होने पर जातक प्रसिद्धि प्राप्त करता है। वह अपना पारिवारिक व्यवसाय भी अपना सकता है।

### राहु

जातक डॉक्टर हो सकता है और विषैली दवाओं (ऐंटी बायोटिक्स) का प्रयोग करता है। वह औषधि विक्रेता, सैनिक, डाकू या चोर भी हो सकता है। वह मशीनरी निर्माण या इलैक्ट्रोनिक्स से संबद्ध भी हो सकता है।

### केतु

जातक का व्यवसाय हाथियों से संबद्ध हो सकता है (केतु के देवता गणपति)। केतु सूक्ष्म यंत्रों का कारक है। अतः जातक घड़ियों के व्यवसाय से संबंधित हो सकता है (मशीने जो समय दिखाती है)। केतु प्रधान जातक आध्यात्मिक प्रवृतियों का भी हो सकता है।

जब राहु और केतु का विचार किया जा रहा है, तब उनके राशी स्वामियों का भी विचार कर लेना चाहिये। कभी कभी वे राहु केतु से ज्यादा सटीक संकेत दे देते हैं।

कारकांश एवं स्वांश जैमिनी में बहुत महत्वपूर्ण हैं, और आधुनिक शोधकर्ता ज्योतिषी श्री के.एन. राव का मत है कि कारकांश पर कुछ निर्धारक रुप से कहने के पहले बहुत शोध की आवश्यकता है।

### अभ्यास

1. जैमिनी पद्धति में कारकांश का क्या महत्व है ?
2. जैमिनी पद्धति में कारकांश द्वारा फल विवेचन में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
3. जैमिनी ने किन राशियों में स्थित कारकांश की प्रशंसा की है ?
4. अगर शनि कारकांश लग्न में या उससे केंद्र में स्थित हो तो फल क्या होगा ?
5. राहु और केतु के फलकथन में किन तथ्यों पर विचार करना चाहिए ?

# 11. राशि दशाओं के फल

जब भी किसी ग्रह की दशा आती है तो उस ग्रह के गुण जातक में आ जाते हैं। उदाहरणार्थ अगर किसी जातक की मंगल की दशा चल रही हो तो वह साहसी तथा ऊर्जावान हो जाता है। इसी प्रकार जब किसी राशि की दशा चलती है तो जातक का स्वभाव उस राशि के अनुसार परिणत हो जाता है। राशि के चित्रित चिन्ह (Pictoral Symbols) फल का अनुमान करने में सहायक होते हैं। राशिस्वामी के कारकत्व, राशी का तत्व और उसकी गतिशीलता भी फलकथन में सहायक होते हैं।

**मेष दशा**

जब मेष राशी की दशा आती है तब–

- जातक तेजस्वी, ऊर्जावान होता है तथा कार्यक्षेत्र में तीव्र प्रगति करता है।
- उष्णता जनित व्याधि से ग्रस्त हो सकता है।

**वृष दशा**

वृष का चिन्ह वृषभ है। आधुनिक युग में इसका पर्याय वाहन है। जातक के साथ वाहन संबंधी कोई घटना घट सकती है जैसे वाहन की खरीद या वाहन से दुर्घटना। व्यापार में प्रगति हो सकती है। गुप्त रोग भी संभव है।

**मिथुन दशा**

- सामाजिक मेल–मिलाप बढ़ता है।
- त्वचारोग संभव है।

**कर्क दशा**

- विदेश यात्रा या व्यापार की संभावना होती है।
- जल संबंधित कार्य भी संभव है।

**सिंह दशा**

- जातक तेजस्वी और एकाकी होता है।
- तीव्र प्रगति या पतन संभव है।
- ऊष्णता से उत्पन्न व्याधि या हृदय रोग भी हो सकते हैं।

**कन्या दशा**

- व्यापार या लेखन कार्य प्रगति करता है।
- स्नायुतंत्र की व्याधि हो सकती है। (Nervous Disorders)

Future Point

### तुला दशा

- यह दशा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। जातक को सुख व आनंद प्राप्त होते हैं। व्यापार, सौंदर्य बढ़ता है।
- यौन रोग हो सकते हैं।

### वृश्चिक दशा

- जातक को बिच्छुओं, सर्प या विष से हानि संभव है।
- अगर जातक राजनीति में है तो धन का गैरकानूनी लेनदेन या षडयंत्र भी हो सकता है।
- किसी इंजेक्शन से कष्ट या दवा से विषैला प्रभाव संभव है।

### धनु दशा

- उत्थान या पतन संभव है अथवा जातक घोड़े से या किसी ऊंचाई से गिर सकता है। यह उत्थान या पतन–व्यवसायिक, आर्थिक, या मान सम्मान के संधर्भ में भी हो सकता है।
- अचानक दुर्घटना या रोग हो सकते हैं।

### मकर दशा

- मकर परिवर्तन की राशि है। जीवन में हर प्रकार का परिवर्तन संभव है।
- पैरों, जोड़ों और वातसंबंधी रोग होते हैं।

### कुंभ दशा

- जातक सामाजिक, धार्मिक एवं पवित्र गतिविधियों में भाग लेता है।

### मीन दशा

- जातक धार्मिक, अंतर्मुखी हो जाता है तथा सत्कार्यों में समय व्यतीत करता है।

## अभ्यास

1. जब किसी राशि की दशा प्रारंभ होती है तब वह जातक को किस प्रकार प्रभावित करती ?
2. जैमिनी के अनुसार सर्वश्रेष्ठ राशिदशा कौन सी है। ?
3. धनु और सिंह दशाओं की क्या विशेषता है ?

Future Point

# 12. कुछ कष्टकारक दशाएं

ज्योतिषी का कर्तव्य है कि वह जातक को आने वाले खतरों से सावधान करे, और सुरक्षा के लिये ज्योतिषीय उपाय बताए।

जैमिनी पद्वित में कुछ दशाएं हैं जो आने वाले कठिन समय की पूर्व सूचना देती हैं। कभी–कभी ये दशाएं कष्ट की जगह शुभ फल, उत्थान और संपन्नता भी देती हैं। परंतु यह फल प्रत्येक कुंडली पर निर्भर करता है।

**1. आत्मकारक की दशा**

जिस राशि में आत्मकारक स्थित होता है, उस राशि की दशा को आत्मकारक की दशा कहते हैं। सामान्यतः आत्मकरक की दशा पतन का संकेत देती है। यह स्तर में मामूली गिरावट ला सकती है या गंभीर बीमारी या दुर्घटना या मृत्यु आदि दे सकता है। परिवार के किसी सदस्य को कष्ट भी हो सकता है। कभी कभी जातक का उत्थान भी हो जाता है। क्या होगा, यह जन्मपत्रिका पर निर्भर करता है। अगर आत्मकारक धनु या सिंह में स्थित हो तो पतन की संभावना बढ़ जाती है। परन्तु यदि आत्मकारक उच्च स्तर के राजयोगों में सम्मिलित है तो जातक का उत्थान भी हो सकता है।

**2. कारकांश की राशि की दशा**

कारकांश राशि की दशा में भी उपरोक्त वर्णित दुष्प्रभाव होते हैं।

**3. आत्मकारक** या **कारकांश** से 6, 8, 12 भाव की राशिदशा भी कष्टकारक हो सकती है।

**4. धनु या सिंह दशा**

**कष्टकारक दशाओं का समावेश :**

इन दशाओं में दुर्घटना, मृत्यु, ऊंचे स्थान से गिरना आदि संभावित हैं। किंतु कुछ जातक उत्थान और संपन्नता भी प्राप्त कर सकते हैं।

**उपाय :**

यदि कुंडली में कुछ दुबर्लताएं हैं और वे, इस प्रकार की दशाओं में कष्ट देने, या मृत्यु तुल्य कष्ट देने की संभावना बना रही हैं, तो निम्न उपाय सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं।

1. महामृत्युंजय जप।
2. विष्णु सहस्त्रनाम पाठ।
3. हनुमान चालीसा पाठ।



Future Point

Future Point

## कष्टकारक दशाओं के उदाहरण

### उदाहरण 1

### वायुसेना विमान चालक (दुर्घटना)

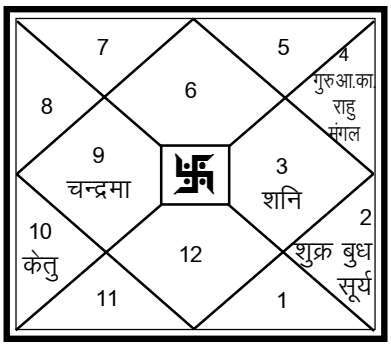


जातक वायुसेना के दो विमानों के आकाश में आपस में टकराने से दुर्घटनाग्रस्त हुआ। किन्तु किसी प्रकार से उसका जहाज पृथ्वी पर उतरने में सफल हो गया। उसे गंभीर चोटें आयीं। उसकी गर्दन की हड्डी टूट गयी। वह 3–4 दिन तक बेहोश रहा। इसके बाद 4–5 महीनों तक उसके प्लास्टर चढ़ा रहा। मगर वह पूर्णतः स्वस्थ हो गया तथा अगले 15 वर्षों तक विमान चालक बना रहा। दुर्घटना के समय उसकी मकर–कुंभ–मिथुन दशा चल रही थी। कुंभ आत्मकारक गुरु से अष्टम स्थान पर है और मिथुन आत्मकारक से 12वीं राशि है। अतः आत्मकारक से अष्टम और द्वादश राशियों की दशा में दुर्घटना हुई।

### उदाहरण 2

### भवन निर्माता (आर्थिक पतन)

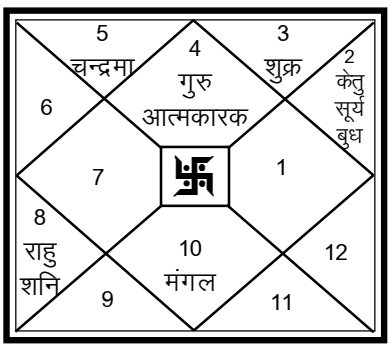


यह कुंडली दिल्ली के प्रसिद्ध निर्माणकर्ता की है। उन्होंने दिल्ली के एक उद्योगपति के साथ व्यवसायिक गठबंधन किया तथा कई करोड़ रुपयों का निवेश किया। पिछले 4–5 वर्षों से मुकदमेबाजी चल रही है और धन फंसा हुआ है। धनु की महादशा चल रही है। इसने उनके आर्थिक स्तर को जबरदस्त धक्का लगाया है। धनु आत्मकारक से छठी राशि भी है जो विवाद मुकदमा दर्शाती है।

## उदाहरण 3

## लता मंगेशकर (उत्थान)

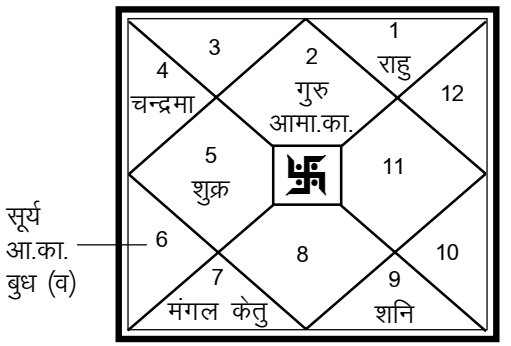


सिंह–धनु दशा में उन्हें भारतरत्न उपाधि से 2001 में सम्मानित किया गया जो उनके जीवन की सबसे शुभ घटना रही। सिंह से दशम में आमात्यकारक गुरु स्थित है और धनु से दशम में आत्मकारक बुध स्थित है। अतः इस दशा में उनका उत्थान हुआ।

## उदाहरण 4

## इंदिरा गांधी (पिता की मृत्यु– चुनाव में हार)

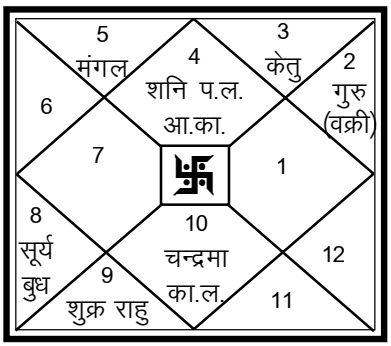


- वृश्चिक–सिंह में 27–5–1964 को उनके पिता जवाहर लाल नेहरु का निधन हुआ। **वृश्चिक** में पित्रकारक सूर्य स्थित है और ज्ञातिकारक चन्द्र से दृष्ट है। **सिंह** कारकांश से अष्टम भाव की राशी है तथा उसमें भ्रातकारक स्थित है और वह भी ज्ञातिकारक चन्द्र से दृष्ट है। अतः दशा व अंतर दशा में सूर्य तथा भ्रातकारक पीड़ित है और इस कारण इस दशा में पिता की मृत्यु हुई।
- कन्या–कुंभ (1997) में वे चुनाव हारी। अंतरदशा कुंभ, लग्न तथा पद लग्न से अष्टम भाव की राशी है। आत्मकारक शनि से भी अष्टम में है। अतः इस दशा ने उन्हें पद से गिराया।

Future Point

## अभ्यास

1. आत्मकारक की दशा कौनसी होती है ? इस दशा में क्या परिणाम रहते हैं ?
2. आत्मकारक से संबंधित कौन सी दशाएं कठिन होती हैं ?
3. कारकांश से संबंधित कौन सी दशाएं कठिन होती है ?
4. धनु या सिंह दशा में क्या घटनाएं संभावित हैं ?
5. इन कष्टकारक दशाओं के बारे में सारांश में क्या कह सकते हैं ?
6. कष्टकारक दशाओं के कम से कम दो उदाहरण दें।

Future Point

# 13. जैमिनी पद्धति से भविष्य कथन

जैमिनी द्वारा कुंडली विश्लेषण के पहले पाराशरी पद्धति में दक्षता होनी चाहिये क्यों जैमिनी पाराशरी का ही संवर्धित रुप है। कुंडली का पहले पाराशरी विश्लेषण कर लेना चाहिये। उसके बाद जैमिनी से क्रमानुसार विश्लेषण करना चाहिये।

## I. प्रथम चरण

1. लग्न तथा नवांश कुंडली बनाएं।
2. अंशो के अनुसार चर कारक बनाएं।
3. कारकांश लग्न का निर्धारण करें।
4. पद लग्न बनाएं।
5. उपपद बनाएं।
6. जातक की जिज्ञासा के अनुसार महत्पूर्ण आरुढ़ पद बनाएं।
7. चर महा दशा व वर्तमान अंतर दशा की गणना करें।
8. कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं के समय की दशा अंतर दशा बना कर कुंडली की शुद्धता सिद्ध करें। (Verify the horoscope)

## II. द्वितीय चरण

### कुंडली के योग (Promises) पहचाने।

कुंडली में उपस्थित योगों को इस प्रकार से जांच लेना चाहिये।

1. देखें कि कुंडली के कौन–कौन से भाव विशेष बन रहे हैं (Becoming Prominent) ये भाव कुंडली के ऊर्जा केन्द्र बन जाएंगे और कुंडली में अहम भूमिका निभाएंगे।
   कुंडली में कोई भाव विशेष तब बनता है जब –
   (i) कारक उस भाव में स्थित होते हैं।
   (ii) कारक उसे भाव को दृष्टि देते हैं।
   (iii) अनेक कारक उस भाव में युति करते हैं।
   (iv) या दो भावों में राशी परिवर्तन होता है।
2. कुंडली में उपस्थित जैमिनी योगों को पहचान लें।
3. अगर कुंडली में कोई विशेष बात दिख रही है तो उसे समझ लें। (Any Striking feature)
   – इस प्रकार कुंडली के योग (Promises) पकड़ में आ जाएंगे। दशा के अनुसार ये योग अपना फल देंगे।

Future Point

## III. तृतीय चरण

### चर दशा विश्लेषण

जैमिनी द्वारा फलितकथन में की शुरुआत कारकांश लग्न से होती है, किन्तु जन्म लग्न भी महत्वूर्ण है।

1. यह देखें कि कारकांश लग्न से किस भाव की राशि की दशा चल रही है। प्रथम, द्वितीय, दशम ?
2. अब राशि दशा को लग्न मानकर कुंडली देखें तथा दशा से केंद्रं व त्रिकोण भाव देखें।
   - देखें कि किस भाव में कौन से कारक स्थित हैं और कौन से कारकों की उनपर दृष्टि है। इस प्रकार राशिदशा से कौन–कौन से भाव, कारकों की स्थिति या दृष्टि से, बली हो रहे हैं।
   - इसी प्रकार राशिदशा से त्रिकभावों पर भी ध्यान दें।
   - इस प्रकार राशि दशा से विभिन्न भावों के बली/निर्बल होने का पता चल जाएगा और ऐसे संमवित घटना का संकेत मिल जाएगा।
3. इसी तरह से अंतरदशा राशि को लग्न मानकर विश्लेषण करें।
4. महादशा और अंतरदशा का आपसी संबंध देखें।
5. कुंडली के योगों (Promise) के अनुसार दशा की संभवित घटना का विचार किया जाएगा।
6. जन्म से दशाओं के क्रम पर ध्यान दें (Sequence of dasha from birth)। अर्थात एक के बाद एक कैसी दशाएं आयीं/इससे निम्न बातों का ज्ञान होगा।
   (अ) जातक का प्रारंभ से विकास। (Development of Personality from the beginning)
   (आ) आनेवाली दशाओं की आशाएं या निराशाएं।
7. परिणामों का समकालीन विंशोत्तरी दशा से तुलना करें। अधिकांशतः दोनों दशाओं के परिणाम समान ही मिलेंगे।

### घटना कब घटेगी (Timing of Event)

जैमिनी में कोई घटना तब घटित होती है

– जब पहले कुंडली में उस प्रकार को योग होता है।

– उसके उपरांत जब ***कारक–***

- घटना से संबंधित ***कारकों*** से या
- घटना से संबंधित ***पदों*** से (आरुढ़) या
- घटना से संबंधित ***भावों या भावों के स्वामियों*** से ***संबंध*** दशा अंतरदशा गोचर में बनाते हैं।
- जब शनि तथा गुरु साथ–साथ उक्त कारकों, भावों, या उनके स्वामियों के साथ ***गोचर*** में संबंध बनाते हैं।

उदाहरण

नौकरी लगना

- अगर कुंडली में नौकरी का योग है, तब जब–

जन्म लग्न से, या कारकांश लग्न से, या पद लग्न से, या राशी दशा से–

दशम या एकादश भाव, आत्मकारक या आमात्य कारक से–दशा, अंतर दशा, या गोचर में प्रभावित होता है, और शनि तथा गुरु गोचर में इनसे संबध बनाते हैं, तब नौकरी लगती है।



Future Point

Future Point

**उदाहरण**

लता मंगेशकर

जन्मतिथि 28–09–1929

जन्म समय 22 घंटे 44 मिनट 59 सेकेंड

जन्म स्थान इंदौर

**लग्न**

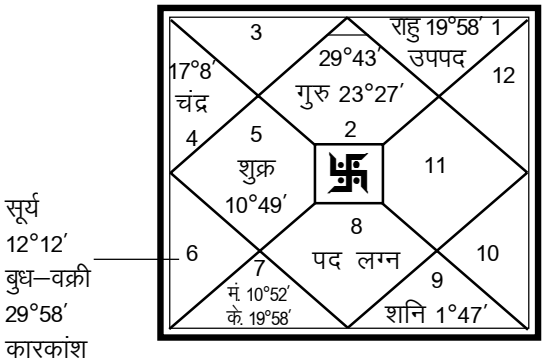


| | |
|---|---|
| लग्न | 29°43' |
| सूर्य | 12°12' |
| चन्द्रमा | 17°08' |
| मंगल | 01°52' |
| बुध | 29°58' |
| गुरु | 23°27' |
| शुक्र | 10°49' |
| शनि | 01°47' |
| राहु | 19°58' |
| केतू | 19°58' |

**नवमांश**

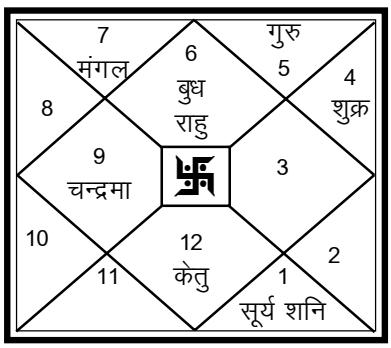


**दशमांश**

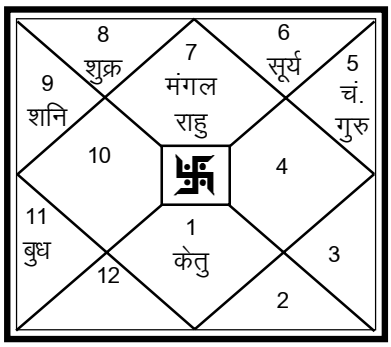


(लग्न और ग्रहों के अंश कुंडली में लिख देने से विश्लेषण में आसानी हो जाती है।)

लता मंगेशकर भारत की प्रसिद्ध गायिका हैं, जिनके नाम से सब परिचित हैं। उन्होंने संगीत जगत में 50 वर्षों से अधिपत्य बनाया हुआ है। वे 50,000 से अधिक गीत गा चुकी हैं।

| चर कारक | | | लग्न | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आत्मकारक | – | बुध | कारकांश | – | कन्या |
| आमात्यकारक | – | बृहस्पति | पदलग्न | – | वृश्चिक |
| भ्रातृकारक | – | चंद्र | उपपद | – | मेष |
| मातृकारक | – | सूर्य | | | |
| पुत्रकारक | – | शुक्र | | | |
| ज्ञातिकारक | – | मंगल | | | |
| दाराकारक | – | शनि | | | |

## चर दशा

### उत्क्रम (Indirect)

भोग्य दशा – वृष – 3 वर्ष

28.9.1932 – वृष (3 वर्ष)

28.9.1938 – मेष (6 वर्ष)

28.9.1948 – मीन (10 वर्ष)

28.9.1958 – कुंभ (10 वर्ष) – (राहु तक गिने)

28.9.1959 – मकर (1 वर्ष)

28.9.1964 – धनु (5 वर्ष)

28.9.1975 – वृश्चिक (11 वर्ष) – (मंगल व केतु तक गिने)

28.9.1985 – तुला (10 वर्ष)

28.9.1997 – कन्या (12 वर्ष)

28.9.2008 – सिंह (11 वर्ष)

28.9.2020 – कर्क (12 वर्ष)

### उनके जीवन की मुख्य घटनाएं

पिता की मृत्यु – 1934

गायन में प्रथम सफलता – 1949

फिल्मफेयर पुरस्कार – 1958

लतामंगेशकर मेडिकल फ़ाउन्डेशन की स्थापना – अक्टूबर 1989

पद्म विभूषण – 1999

आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (लंदन) – 2000 (Lifetime Achievement Award)

भारत रत्न – 2001

Future Point

## जन्मपत्रिका की जांच (Horoscope Verification)

विश्लेषण से पूर्व पत्रिका की जांच कर लें कि वह ठीक है कि नहीं।

1. **भाई–बहन** : लता के बहनें अधिक हैं क्योंकि तृतीय भाव में चंद्र स्थित है।
2. **पिता की अल्पायु** : सामान्यतः नवम भाव को पिता के लिए देखा जाता है। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि है और नवमेश शनि अष्टम में है और राहु द्वारा दृष्ट है। अगर दशम भाव को पिता के लिए माने तो भी इसका स्वामी शनि ही है तथा परिणाम वही रहेंगे।
3. **लता बहुत प्रसिद्ध हैं** : शनि और बुध कारकांश लग्न से केंद्र में हैं। (A combination for fame)
4. **उनकी आवाज मधुर है** : शुक्र चंद्रमा से द्वितीय भाव में है।
5. **प्रतिद्वंद्वी उनके सामने नहीं ठहर सके** : छठे भाव में वर्गोत्तम मंगल और केतु स्थित हैं।

   अतः कुंडली ठीक प्रतीत होती है।

### कारकांश कन्या में है

- परिणाम मिथुन और कन्या के समान रहेंगे। कोई त्वचा रोग हो सकता है। उनके चेहरे पर चेचक के निशान हैं। मिथुन प्रधान व्यक्ति गायक और कन्या प्रधान कलाकार होते हैं।
- सूर्य कारकांश लग्न में स्थित हैं। उनकी कला का प्रदर्शन राष्ट्रीय स्तर पर उच्चतम कोटि का है। सरकार से उच्चतम पुरुस्कार प्राप्त हो चुके हैं।
- सूर्य के साथ बुध भी कारकांश में स्थित है। बुध पंचमेश स्वयं है, तथा उच्च व वगोत्तम है। कुंडली में कारकांश, प्रधान भाव बन रहा है एवं उर्जा का केन्द्र बना हुआ है। कारकांश में पंचमेश व आत्मकारक बुध, दाराकारक शनि से दृष्ट हो कर, राजयोग बना रहा है। यह राजयोग कारकांश को और भी शक्तिशाली बना रहा है। ऐसा शक्तिशाली कारकांश, पद लग्न से लाभ भाव (एकादश) में स्थित होकर अपार धन का संकेत दे रहा है। जैमिनी योगों के अतिरिक्त कारकांश लग्न में पाराशरी योग भी उपस्थित हैं। द्वितीयेश और पंचमेश बुध तथा चतुर्थेश सूर्य ने प्रभावशाली धनयोग का स्रजन किया है क्योंकि इन दोनों पर योगकारक शनि की, और एकादशेश गुरु की दृष्टि है। उच्च के बुध और सूर्य ने उत्तम बुधादित्य योग का निर्माण किया है, जिस पर गुरु की भी दृष्टि है। कारकांश लग्न से पंचम भाव पर गुरु और शुक्र की दृष्टि है जो शास्त्रीय कला का संकेत है। इस प्रकार पत्रिका पर कारकांश का प्रबल प्रभाव है।

### पद लग्न

पद लग्न वृश्चिक में है। पुत्रकारक शुक्र पद लग्न से दशम भाव में स्थित है जो कला, सृजन और संगीत में रुचि और प्रतिभा का संकेत दे रहा है। पद लग्न से एकादश भाव कारकांश लग्न है जिसके महत्व का व्याख्यान हो चुका है।



Future Point

**उपपद**

उपपद मेष में है। उपपद में राहु स्थित है जिससे सप्तम में केतु और मंगल स्थित हैं। ये सब विवाहक्षेत्र में दोष के संकेतक हैं। उपपद पर पुत्रकारक शुक्र की दृष्टि है। किसी समय लता मनपसंद व्यक्ति से विवाह करने की इच्छुक थीं। उपपद से सप्तमेश शुक्र पर राहु, केतु और मंगल की दृष्टि है जिसने विवाह नहीं होने दिया।

## चर दशा द्वारा जीवन घटनाक्रम का विश्लेषण

1. **गायनक्षेत्र में प्रथम सफलता (1949)**

**कुंभ–मेष** : मेष से दशम भाव आमात्यकारक वृहस्पति और पुत्रकारक शुक्र द्वारा दृष्ट है जिस कारण प्रथम सफलता प्राप्त हुई।

2. **लतामंगेशकर मेडिकल फाउन्डेशन (अक्टूबर 1989)**

**कन्या–कुंभ** : कन्या महादशा कारकांश की दशा है। क्योंकि आत्मकरक भी कन्या में स्थित है, इसलिये यह महादशा आत्मकारक की है। आत्मकारक की दशा में पतन होता है। लता के कार्यक्षेत्र में दूसरी गायिकाओं से प्रतिद्वंद्विता आरंभ हो गयी। किंतु छठे भाव की प्रबलता से उन्हें हानि नहीं हुई।

अक्टूबर 1989 में कन्या–कुंभ में उनके परिवार ने लतामंगेशकर मेडिकल फाउन्डेशन की स्थापना की। इस उदार कृत्य का करण है आमात्यकारक गुरु (सौम्य ग्रह) कन्या से नवम भाव में स्थित है। उस पर ज्ञातिकारक मंगल की छठे भाव (बीमारी से संबंधित) से दृष्टि है। अंतर्दशा अमृत की राशि कुंभ की थी जो उदारता का संचार करती है। इस प्रकार सामाजिक, धार्मिक और पवित्र कर्मों की प्रधानता हुई। कुंभ पर भी ज्ञातिकारक मंगल की दृष्टि है जो चिकत्सा क्षेत्र से संबंध दर्शाती है। तथा कुंभ से षष्ट भाव में भ्रातृ कारक चन्द्र स्थित है जो भाई बहनों का मेडिकल क्षेत्र में सहयोग दिखा रहा है।

3. **लाइफ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड पुरुस्कार 2000**

**सिंह–वृश्चिक** : सिंह की चर दशा प्रभावी थी। सिंह राजकीय राशि है तथा उत्थान या पतन कराने में सक्षम है। यह पद स्थान चतुर्थ भाव में स्थित है। सिंह से दशम भाव में आमात्यकारक वृहस्पति स्थित है।

अंतर्दशा राशी वृश्चिक, पद प्राप्ति के सप्तम भाव (प्रसिद्धि का भाव) में स्थित है। वृश्चिक से एकादश भाव में आत्मकारक स्थित है। वृश्चिक पर द्वादश भाव से राहु की दृष्टि है जो विदेश से संबंध दर्शाती है। यह पुरस्कार उन्हें लंदन में दिया गया।

4. **भारत रत्न 2001**

**सिंह–धनु** : भारतरत्न भारत सरकार द्वारा प्रदत्त उच्चतम अलंकरण है। सिंह इसके लिए पहले से ही सक्षम है। धनु भी उत्थान या पतन कराने में सक्षम है। आत्मकारक बुध धनु से दशम भाव में स्थित


Future Point

है। तथा धनु में दाराकारक शनि स्थित है जो आत्मकारक बुध से दृष्ट हो कर राजयोग बना रहा है। और धनु से एकादश भाव आमात्यकारक वृहस्पति द्वारा दृष्ट है। इन सब शुभ प्रभावों के कारण लता इस उच्च सम्मान की भागी बनीं।

किंतु सिंह दशा 2008 तक चलेगी। लता की वर्तमान आयु 72 वर्ष है। वह सिंह दशा में कार्यक्षेत्र से अवकाश ले सकती हैं।

**निष्कर्ष**

इस प्रकार से जन्मपत्रिका का विश्लेषण करना चाहिए :

- प्रत्येक भाव के बल का आकलन करें।
- योगों पर ध्यान दें। इन दो बातों से पत्रिका की उम्मीदों/निराशाओं का पता चल जाता है।
- दशाओं से शुभाशुभ घटना के फलित होने के समय का ज्ञान हो जाता है।
- गोचर से अंतिम फल प्राप्त हो जाता है। इस पुस्तक में गोचर के प्रयोग का वर्णन नहीं किया गया है। गोचर में शनि तथा गुरु की भूमिका अहम है। गोचर में जब, शनि तथा गुरु घटना संबंधित भावों से, या भावाधिपतियों से, या संबंधित कारकों से, नौ महीनो के अंदर संबंध बनाते हैं (इस नियम में वक्री दृष्टि भी लागू है), तब घटना घटित होती है। शनि काल स्वरुप है और कर्मों के अनुसार फल प्रदान करता है, इसलिये जब तक शनि अपना Clearance नहीं देता है तब तक कोई घटना नहीं घटती है। इसी प्रकार गुरु ईश्वर का आशीर्वाद है, उस आशीर्वाद के बिना भी कुछ नहीं होता है। इसलिये इन दोनो ग्रहों की भूमिका अहम है।

## अभ्यास

1. एक ज्ञात कुंडली लें।

   जातक के जीवन की प्रमुख घटनाओं की सूची तैयार करें।

   ऊपर वर्णित क्रम से पत्रिका का विश्लेषण करें।

Future Point

# 14. जन्मपत्रिका का विश्लेषण

**1. समान्य विश्लेषण**

किसी पत्रिका के संपूर्ण विश्लेषण की जगह बेहतर होगा कि कुंडली का सामान्य विश्लेषण करने के बाद जातक की समस्या और प्रश्न के ऊपर ध्यान केंद्रित किया जाये।

**विधि**

1. लग्न के बल की जांच करें। अगर लग्न निर्बल है तो पत्रिका में कितने ही राजयोग हों, सफलता संदिग्ध है।
2. पूर्वपुण्य के स्थान, पंचम भाव के बल पर ध्यान दें। जातक का जीवन पूर्वपुण्य से निर्देशित होता है।
3. नवम भाव के बल का अनुमान करें। जातक का भाग्य कैसा है ?
4. दशम भाव कैसा है ? इस जीवन में कर्म की क्या स्थिति है ?

   उपरोक्त निरीक्षण से पत्रिका की रुपरेखा उजागर होने लगती है।
5. त्रिक भावों 3, 6, 8 और 12 पर ध्यान दें। जातक की कमजोरियां क्या हैं ?
6. पत्रिका के कौन–कौन से भाव, ग्रहों की स्थिति, दृष्टि और विनिमय द्वारा महत्वपूर्ण हैं ?
7. पत्रिका में क्या कोई महत्वपूर्ण शुभाशुभ योग उपस्थित है ?
8. इसी प्रकार नवांश तथा दशमांश का निरीक्षण करें।
9. दशा क्रम देखें।
10. मन्द गति वाले ग्रहों के गोचर पर ध्यान दें। ये ग्रह हैं शनि, वृहस्पति, राहु और केतु।
11. किसी भाव से फल को जानने के लिए इन पांच का निरीक्षण करें।

    (i) संबंधित भाव
    (ii) भावेश
    (iii) कारक
    (iv) दशा, अंतर, प्रत्यंतर
    (v) गोचर
12. देश–काल–पात्र का ध्यान रखें।
13. दृष्टिकोण सकारात्मक रखें। पत्रिका के शुभ पहलुओं पर भी ध्यान दें, केवल कमजोरियों पर ही नहीं।

Future Point

## II. जैमिनी विश्लेषण

जैमिनी सूत्रों के रचनाकाल के समय जीवन शैली सरल थी किंतु जैमिनी के नियम आधुनिक जीवन में भी उपयुक्त हैं।

### (अ) कारकांश

जैमिनी ने आत्मकारक ग्रह और नवांश में उसकी राशि अर्थात कारकांश को बहुत महत्व दिया है। अतः जैमिनी फलितकथन में कारकांश की महत्ता सर्वोपरि है। किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि जन्म लग्न की ओर ध्यान नहीं दिया जाए। दोनों का समन्वय लाभप्रद है।

विभिन्न पहलुओं के लिए कारकांश लग्न से विभिन्न भावों का अध्ययन आवश्यक है। उदाहरण के लिए शिक्षा और संतान के लिए कारकांश लग्न से पंचम भाव ओर भवन के लिए कारकांश लग्न से चतुर्थ भाव देखने चाहिएं।

| कारकांश से संबंधित भाव में स्थित ग्रह | अधीन विषय |
|---|---|
| प्रथम, द्वितीय, दशम | व्यवसाय |
| चतुर्थ | निवास, भवन |
| नवम | धर्म और भक्ति |
| सप्तम | जीवन साथी का स्वभाव |
| दशम | जातक का सामान्य स्वभाव |
| तृतीय | जातक का सुदृढ़ पक्ष (His strength) |
| द्वादश | मृत्यु के बाद जीवन |
| प्रथम, द्वितीय और पंचम | शिक्षा, ज्ञान |

टिप्पडी : आयुनिर्णय के लिए जैमिनी ने संपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत किया है जिसे अलग से मनन करने की आवश्यकता है।

### (आ) आरुढ़ या पद लग्न

जातक के धन के विषय में जानने के लिए आरुढ़ या पद लग्न और इनसे 11वें भाव का अध्ययन करना चाहिए। इन पर शुभप्रभाव लाभकारी और अशुभ प्रभाव हानिकर होते हैं या धनप्राप्ति के अवांछित साधनों को इंगित करते हैं।

### व्यय और धनहानि के लिए

आरुढ़ से 12वां भाव व्यय का संकेतक है। इस भाव में आसीन ग्रह व्यय का कारण दर्शित करते हैं।

Future Point

### भाई बहन

- अगर राहु तृतीय या एकादश भाव में स्थित हो तो अधिकांश कुंडलियों में जातक भाई–बहनों में सबसे बड़ा या सबसे छोटा होता है। (कम से कम अपने लिंग में)। यह सिद्धांत श्री के.एन.राव ने प्रतिपादित किया है। अगर आरुढ़ से तृतीय या एकादश में चंद्र, गुरु, बुध और मंगल हों तब उत्तम भाई–बहनों की संख्या पर्याप्त होती है।

### कारकांश और पद लग्न में सूक्ष्म अंतर

जैमिनी विश्लेषण के लिए कारकांश और पदलग्न दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

कारकांश आत्मकारक की नवांश की राशि होती है। जैमिनी के मतानुसार आत्मकारक सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है। वह जातक की आत्मा, तथा उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का संचालन करता है अर्थात भौतिक शरीर, आत्मा, पूर्व कर्म, वर्तमान कर्म और सूक्ष्म देह को नियंत्रित करता है। अतः कारकांश जातक का भौतिक तथा आध्यात्मिक स्तर पर संपूर्ण विश्लेषण कराता है। जैसा कि प्रारम्भ में परिचय में कहा गया है कि जैमिनी ने जातक के व्यक्तित्व को उसके मूल तत्वों में विभाजित करके विश्लेषण किया है।

### पद लग्न

पद लग्न, लग्न का आरुढ़ होता है। यह जातक के बाह्य व्यक्तित्व का द्योतक है। पद, व्यवसाय, प्रोन्नति, धन, जीवन साथी, भाई–बहन, स्वास्थ्य आदि का ज्ञान पद लग्न से होता है।

अतः कारकांश जातक का संपूर्ण विस्तार दिखाता है और पद लग्न मुख्यतः उसका भौतिक विस्तार दिखाता है।

### उपपद

उपपद द्वारा जीवन साथी के व्यक्तित्व की जानकारी प्राप्त होती है। संतान और भाई बहनों के बारे में भी कुछ तथ्य पता चल जाते हैं।

उपपद को गौण पद भी कहते हैं। अगर इसका संबंध शुभ ग्रहों से है तो वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। उपपद का संबंध अशुभ ग्रहों से होने पर वैवाहिक जीवन कष्टप्रद होता है। अगर उपपद या इससे दूसरा भाव व आठवा भाव प्रबल अशुभ प्रभावों में है तो जातक अविवाहित रह सकता है या सन्यास ले सकता है।

- इसी प्रकार से उपपद से पंचम और नवम भावों को संतान के लिए देखना चाहिए।
- भाई बहनों के लिए उपपद से तृतीय और एकादश भावों का अध्ययन करना चाहिए।

इस प्रकार ***विभिन्न लग्नों, भावों, तथा ग्रहों का अध्यन करने के पश्चात दशा, व गोचर का अध्यन करने से उत्तम कुंडली विश्लेषण होता है।***

### अभ्यास

1. कारकांश द्वारा जन्मपत्रिका का विश्लेषण किस प्रकार किया जाता है ?
2. पद लग्न से क्या ज्ञात होता है ?
3. उपपद किस प्रकार जन्मपत्रिका विश्लेषण में सहायक है ?



Future Point

# 15. 'जातक तत्व' के गुण

जातक तत्व की रचना रतलाम के श्री महादेव पाठक ने लगभग 125 वर्ष पूर्व की थी। इसे ज्योतिष के महान ग्रंथों के समकक्ष माना जाता है। लेखक ने कुशलता के साथ जैमिनी और पाराशरी सिद्धांतों का सम्मिश्रण करके सटीक भविष्यकथन की विधि विकसित की है। इस ग्रंथ से जैमिनी के कुछ संकेत नीचे दिये जा रहे हैं।

श्री महादेव पाठक ने आत्मकारक को और उसकी नवांश राशि अर्थात कारकांश को बहुत महत्व दिया है।

**अंशाद्धर्मे शुभदृष्टयुते धर्मनिरतः सत्यवादी गुरुभक्तश्चान्यथा तुपापदृष्टयुते।**

अगर कारकांश से नवम भाव में शुभग्रह स्थित है या उसकी दृष्टि है तो जातक गुणवान, सत्यवक्ता, अपने बड़ों और गुरुओं का भक्त होता है। अगर इस नवम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो या उसकी दृष्टि हो तो शुभ फल प्राप्त नहीं होते हैं।

**कारकांश**

1. **मेषांशे मूषिका मार्जारं दुःखदम।**

   अगर कारकांश मेष में है तो जातक को चूहों और बिल्लियों से कष्ट होता है।

2. **वृषांशे चतुष्पदाः सुखदाः।**

   अगर कारकांश वृष में है तो जातक को चौपायों से प्रसन्नता प्राप्त होती है। आज यह नियम वाहनों पर भी लागू होता है।

3. **कार्कांशे जलमयं।**

   अगर कारकांश कर्क राशि में स्थिति हो तो जातक को जल से खतरा रहता है।

4. **सिहांशेश्वादयो दुःखदाः।**

   कारकांश सिंह में हो तो जातक को कुत्तों और उनके समान पशुओं से खतरा रहता है।

5. **कन्यांशेऽग्निकणा दुःखदाः।**

   कारकांश कन्या में होने पर आग की चिंगारियों से भय रहता है।

6. **तुलांशे वाणिज्यवान।**

   कारकांश तुला हो तो जातक व्यापारी होता है।

7. **चापांशे वाहना दुच्चप्रदेशतो वा पतनम्।**

   कारकांश धनु में होने पर जातक की मृत्यु वाहन से गिरने से, ऊंचाई से गिरने से या दुर्घटना से हो सकती है। मृत्यु के अतिरिक्त यह उच्चपद से पतन का भी संकेतक है।



Future Point

8. **कुंभांशे तडागादिकर्ता।**

कारकांश कुंभ में होने पर जातक कुंए तालाब आदि का निर्माण और जनकल्याण के कार्य करता है।

9. **मीनांशे त्यागी।**

कारकांश मीन में होने पर जातक त्याग की भावना रखता है।

**भवन (निवास)**

कारकांश से चतुर्थ भाव जातक के निवास का द्योतक है।

1. **तुर्येऽशाच्चन्द्राच्छौ प्रासादवान्।**

कारकांश से चतुर्थ भाव में चंद्र और शुक्र स्थित हों तो जातक महल जैसे भव्य और विशाल भवन का मालिक होता है।

2. **तुर्येऽशादुच्चग्रहे प्रासादवान्।**

कारकांश से चतुर्थ भाव में अगर उच्च का ग्रह स्थित हो तो जातक महल जैसे विशाल भवन का स्वामी होता है।

3. **अंशात्तुर्येराव्हर्कजौ प्रासादवान।**

कारकांश से चतुर्थ भाव में राहु और शनि स्थित हों तो जातक का घर महल जैसा विशाल होता है।

4. **केत्वारौतुर्येशा दिष्टकागृहम।**

कारकांश से चतुर्थ भाव में केतु और मंगल स्थित हों तो जातक का घर ईंटों का बना होता है।

5. **सुखेंशाज्जीवे काष्टगृहम।**

कारकांश से चतुर्थ भाव में वृहस्पति स्थित हो तो जातक का घर लकड़ी का बना होता है (या मकान में लकड़ी का अधिक प्रयोग होता है)। (wood work)

6. **सुखेंशा दर्के तृणगृहम्।**

कारकांश से सुखस्थान में सूर्य स्थित हो तो जातक का घर पत्तों और घास आदि से निर्मित होता है (या छप्पर हो)। या उस तरह की डिज़ाइन का हो।

7. **राल्हकौं अंशे कुजमात्रदृष्टे गृहदाहः।**

कारकांश से चतुर्थ भाव में राहु और सूर्य हों तथा उन पर केवल मंगल की दृष्टि हो तो घर आग में जल सकता है।

**शिक्षा**

1. **अर्थसुतयो रंशाज्जीवे वैयाकरण।**

कारकांश लग्न से द्वितीय या पंचम भाव में वृहस्पति स्थित हो तो जातक भाषाविद होता है।

Future Point

2. **धनेसोत्थे सुतेंशात्ज्ञेज्यौ मीमांशकः।**

कारकांश लग्न से द्वितीय या तृतीय भाव में बुध और वृहस्पति स्थित हों तो जातक मीमांसा (दर्शनशास्त्र) में निपुण होता है।

3. **अंशात्सुतार्थसोत्थे जीवारो तार्किकः।**

कारकांश से द्वितीय, तृतीय और पंचम भाव में गुरु और मंगल स्थित हों तो जातक तर्क में पारंगत होता है।

4. **अंशात्सोत्थे सुतेर्थे केतुजीवों गणितज्ञः।**

कारकांश से द्वितीय, तृतीय और पंचम भाव में केतु और गुरु स्थित हों तो जातक गणितज्ञ होता है।

**भार्या**

1. **द्यूनशाद्गुरु चन्द्रौ स्त्री सुन्दरी।**

कारकांश से सप्तम में गुरु और चंद्र हों तो भार्या सुंदर होती है।

2. **अंशादस्ते सौरे वयोधिका स्त्री।**

कारकांश से सप्तम में शनि हो तो भार्या जातक से अधिक आयु की होती है।

3. **अंशादस्ते भौमे स्त्री विकलांगी।**

कारकांश लग्न से सप्तम में मंगल स्थित हो तो पत्नी विकलांग होगी।

4. **ज्ञेर्स्तेशात्कलावती स्त्री।**

कारकांश लग्न से सप्तम में बुध हो तो पत्नी बहुत बुद्धिमान होती है तथा विभिन्न कलाओं में कुशल होती है। कलावती।

5. **अंशाद्दारेराहौ गृहेस्त्री विधवा।**

राहु कारकांश लग्न से सप्तम हो तो ग्रहस्वामिनी विधवा होती है।

**टिप्पडी** : आधुनिक संदर्भ में विधवा के स्थान पर तलाकशुदा भी मान सकते हैं।

6. **दारेश वा कारके शुभयुतदृष्टे शुभांतरे सुदारः।**

सप्तमेश या सप्तम भाव के कारक से शुभ ग्रह की युति या दृष्टि हो या ये शुभ ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पत्नी उत्तम होती है। सुदारा।

**व्यवसाय**

1. **अंशात्रवे जीवार्कमात्र दृष्टे गोपालः।**

कारकांश लग्न से दशम भाव केवल सूर्य और वृहस्पति से दृष्ट हो तो जातक गाय, भैंस चराने वाला या दूध के व्यवसाय से संबद्ध होता है।

Future Point

**2. अंशादरिगौ पापौ कृषिकर्ता।**

कारकांश लग्न से छठे भाव में दो अशुभ ग्रह स्थित हों तो जातक कृषि से संबद्ध होता है।

**3. अंशाद्धर्मेजीवे कृषिकर्ता।**

कारकांश लग्न से नवम में वृहस्पति हो तो जातक कृषि से संबद्ध होता है।

**4. अंशे रवि शुक्र दृष्टे राजप्रेष्यः।**

कारकांश लग्न पर सूर्य और शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सरकारी कर्मचारी होता है या उसके सरकार से अच्छे संबंध होते हैं।

**5. अंशात्खे ज्ञदृष्टयुते राजप्रेष्यः।**

कारकांश लग्न से दशम भाव में बुध–स्थित हो या उसकी दृष्टि हो तो जातक सरकारी कर्मचारी होता है।

**6. अंशे मंदे प्रसिद्ध कर्माजीवी।**

कारकांश लग्न में शनि स्थित हो तो जातक प्रसिद्धिप्रदायक कार्य/व्यवसाय का चयन करता है।

**7. अंशेकेतौशुक्र मात्रदृष्टे याज्ञिकः।**

कारकांश लग्न में केतु स्थित हो और उस पर सिर्फ शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धर्मगुरु होता है।

**8. अशे ज्ञेन्दुशुक्र दृष्टे वा धनेश द्यूने भिषकः।**

कारकांश लग्न पर बुध, चंद्र और शुक्र की दृष्टि हो और द्वितीयेश सप्तम भाव में हो तो जातक डॉक्टर होता है।

**9. सशुभाराव्हर्कावंशेपापयुतो विषवैद्य।**

कारकांश लग्न में सूर्य और राहु स्थित हों और उनका संबंध शुभ व अशुभ ग्रहों से हो तो जातक डॉक्टर/वैद्य होता है तथा विष द्वारा उपचार का विशेषज्ञ होता है। (Antibiotics)

**10. शुक्रेन्दृष्टेंशे रसवादी।**

कारकांश लग्न पर शुक्र और चंद्र की दृष्टि हो तो जातक रसायनज्ञ होता है।

**11. सौम्येंशे वा कार्कांशे वाणिज्यवान्।**

अगर कारकांश लग्न में बुध हो या कारकांश लग्न की राशि कर्क हो तो जातक व्यापारी/उद्योगपति आदि होता है।

**12. सार्केंशे राजकार्य कर्ता।**

कारकांश लग्न का संबंध सूर्य से हो तो जातक सरकारी सेवा में होता है।



Future Point

13. **अंशे भौमे धातुवादीकौन्तिको वन्हिजीवी च।**

कारकांश लग्न में मंगल स्थित हो तो जातक धातुओं, रसायन, गोला बारुद, हथियार आदि का या आग से संबंधित काम जैसे लुहार, सुनार आदि से संबद्ध होता है।

**इष्टदेव**

केतु का किसी ग्रह से संबंध जातक को भक्त बनाता है, विशेषकर जब केतु मीन में स्थित हो।

1. **केत्वर्कावंशे शिवभक्त।**

कारकांश लग्न में केतु और सूर्य स्थित हों तो जातक शिवभक्त होता है।

2. **अंशेकेतु चंद्रौ गौरीभक्त।**

कारकांश लग्न में केतु और चंद्र स्थित हों तो जातक गौरीभक्त होता है।

3. **अंशे केत्विज्यौ शिवभक्त।**

कारकांश लग्न में केतु और बृहस्पति स्थित हों तो जातक शिवभक्त होता है।

4. **अंशे शिखि शुक्रौ लक्ष्मी भक्त।**

कारकांश लग्न में केतु और शुक्र स्थित हों तो जातक लक्ष्मीभक्त होता है।

5. **अंशे ज्ञार्के जौ विष्णुभक्त।**

कारकांश लग्न में बुध और शनि स्थित हों तो जातक विष्णुभक्त होता है।.

6. **अंशे केत्वारौ स्कन्दभक्त।**

कारकांश लग्न में मंगल और केतु स्थित हों तो जातक सुब्रमण्यभक्त होता है।

**टिप्पणी**

- ग्रह, राशि, एवं भाव के कारकत्व का विचार देश, काल पात्र के अनुसार करें, तथा उनके कारकत्वों का आधुनीकरण करें। सटीकता के लिये नियमों को विस्तारित (Liberal) रुप से लागू करना चाहिये।
- सभी श्लोक श्री महादेव पाठक (रतलाम) की ''जातक तत्वम'' से लिये गये हैं, श्री श्रीनिवास पाठक की टीका से।

Future Point

# 16. Bibliography


1. 'Predicting Through Jaimini's Char Dasha' ***- By K.N. Rao***
2. 'Predicting Through Karakamsa and Jaimini's Mandook Dasha' ***- By K.N. Rao***
3. 'The Nehru Dynasty' ***- By K.N. Rao***
4. 'Famous Women' ***- Guide and Editor K.N. Rao***
5. 'Scientific Hindu Astrology' ***- By P.S. Sastry.***
6. 'Jaimini Sutram' ***- By P.S. Sastry.***
7. 'Jaimini Sutras' ***- By B. Surya Narain Rao***
8. 'Studies in Jaimini Astrology' ***- By B.V. Raman***
9. 'Upadesh Sutras of Jaimini' ***- By K.V. Abhyankar***
10. 'Prediction from Arudha' ***- By C.S. Patel***
11. 'Jatak Tatvam' of Daivagya Shri Mahadeva Pathak (Hindi) ***-Commentary by Sh. Shrinivas Pathak of Ratlam.***
12. 'Jatak Tatva' ***- by S.S. Sareen.***
13. 'Jaimini Sutram' (Hindi) ***- by Shakti Mohan Singh***
14. 'Jaimini Sutras' Adhyayas III & IV ***- by S.K. Kar***
15. 'Jaimini Sutram' (Hindi) ***- by Sita Ram Jha***
16. 'Jaimini Sutram' (Hindi) ***- by Achyutananda Jha***


Future Point

Future Point

ॐ विशिष्ट ज्योतिषीय मासिक पत्रिका ॐ

# फ्यूचर समाचार



## Every issue is worth keeping

- Research Oriented analytical articles of Astrology, Vastu and Palmistry.
- News and Views on the Astrology and Occult related activities.
- Current Affairs and detailed itinerary of Vrats and Festivals.
- Ephemeris of the month.
- Reader's problems and queries regarding Astrology, Vastu and Trade and Stock-Market s Solved in every issue.
- True Identification of remedial articles and their correct use.
- Questions and their answers regarding Astrology and Stories based on actual events with Astrological facts.
- Book Review.
- Important information/articles about places of spiritual importance.
- Special articles on Yoga and Health.
- Projection of Stock-Market and Monthly Prediction.



## All India Federation of Astrologers' Societies

## ॐ RESEARCH JOURNAL ॐ OF ASTROLOGY

- Bilingual
- Research Oriented analytical Articles
- A must for Astrologers and Students

### FUTURE SAMACHAR



| Copy | By Post | By Courier | Other Country |
|---|---|---|---|
| 1-Year | 325 Rs. | 500 Rs. | 30 USD |
| 2-Year | 600 Rs. | 900 Rs. | 55 USD |
| 3-Year | 900 Rs. | 1350 Rs. | 75 USD |
| Life Time | 3000 Rs. | 5000 Rs. | 300 USD |

### AIFAS RESEARCH JOURNAL OF ASTROLOGY



| Copy | By Post | By Courier | Other Country |
|---|---|---|---|
| 1-Year | 200 Rs. | 300 Rs. | 20 USD |
| 2-Year | 350 Rs. | 500 Rs. | 30 USD |
| 3-Year | 500 Rs. | 750 Rs. | 45 USD |
| Life Time | 3000 Rs. | 5000 Rs. | 200 USD |

## SUBSCRIBE BOTH

GET SPECIAL DISCOUNT ON SUBSCRIPTION OF BOTH THESE MAGAZINES

| Copy | By Post | By Courier |
|---|---|---|
| 1-Year | 500 Rs. | 700 Rs. |
| 2-Year | 900 Rs. | 1300 Rs. |
| 3-Year | 1200 Rs. | 1900 Rs. |
| Life Time | 5000 Rs | 8000 Rs. |

**Note :**

- If you shall order for these magazines via ordinary post, your gifts shall be sent to you by courier after 3 months.
- If you shall order for the same via courier your gifts shall reach you along with the magazine.

## GOLDEN CHANCE

for the life members of Future Samachar Life membership of Research Journal of Astrology in only 2000/-

### Membership form

Future Samachar ☐ 1 Year ☐ 2 Year ☐ 3 Years ☐ Life time

Research Journal of Astrology ☐ 1 Year ☐ 2 Year ☐ 3 Years ☐ Life time

I want to be a member of Future Samachar/Research Journal of Astrology

Name........................................................Age..............................

Address..........................................................................................

..........................................................................................................

Phone..............................Mobile..............................E-mail..............................

Cash / D.D. No. / Cheque No..................Date..................Bank & Branch..................For Rs..................

Please send your Demand Draft or cheque favouring Future Point Pvt. Ltd. payable at Delhi. Please, add Rs. 50/- for cheques outside of Delhi.

Signature

ॐ Future Point (P) Ltd. H-1/A, Hauz Khas, New Delhi-110016
Ph. : 26569200-01, 26569600-01, 26566000
E-mail:mail@futurepointindia.com, web: www.futurepointindia.com

Future Point

Future Point

# All India Federation of Astrologers' Societies

## "Learn in Three Months"

**Vaastu**





**Astrology**

**Numerology**





**Palmistry**

Courses can be done through correspondence, by joining regular classes or in short duration as per your convenience

Above mentioned all courses can be done in a small time period of 3 months from "All India Federation of Astrologers' Societies". For all these courses admissions are open in the months of January, April, July and October every year.

- For Architects, Interior designers, students and house wives Vaastu course is specially beneficial.
- Computerised horoscope & Future Samachar Magazine is provided to all the students free of cost.
- All courses can be done by joining regular classes or through correspondence.
- Course fee for each course of 3 months is Rs. 3000/- only. This is an all inclusive amount for your admission fee, examination fee & course fee.

**For more information contact below mentioned centres in Delhi & Noida**

- **Future Point : 011-41656603-04, 26569200-01, 26569800-01**
  H-1/A, Hauzkhas, New Delhi-110016
- **Cosmic Future Point : 9811131939, 66401739**
  20, DDA Shopping Complex, Near Janak Cinema, Janakpuri, New Delhi-110058
- **Shakti Future Point : 23629114, 09811551166**
  4, Harphool Singh Building, Sabzi Mandi, Clock Tower, Roshanaara Road, Delhi-110007
- **Future Point : 011-22058687, 22054546, 09891784746**
  G-16, 3rd Floor, Vikas Marg, Preet Vihar, Delhi- 110092
- **Institue of Vastu & Joyful Living : 27030966-67, 27020736**
  B-282, Saraswati Vihar, Delhi-110034
- **Vaastu Sri Academy : 09810335224, 011-30962651, 20063114**
  F-6, LSC, Vardhaman Plaza, Bhera Enclave, Paschim Vihar, New Delhi-110001
- **Divya Gyaan : 0120-4356839, 9811621839**
  B-183 B, Sector - 19, Noida

**卐 Future Point 卐**

H-1/A, Hauz Khas, New Delhi- 110016

Phone : 011-41656603&04, 26569200-01, 26569800-01, Fax : 26850269

E-mail : mail@futurepointindia.com Web : www.futuresamachar.com


Future Point